

रुक्-ए-कुरान

गौसिया ट्रस्ट

Book Name : Ruku-e-Quran
 Publisher : Ghousia Trust,
 Victory House,
 Moqimpur Usman,
 Rupaspur Nahar,
 Pillar No.125
 AIIMS Digha Road,
 Patna—801503.
 Mobile : 9931819395
 Email : gtrust786@gmail.com
 Web : www.taxlogue.com/gt
 Pages : 1376
 Composer : Munemi Computer
 Ahmad Market,
 Daryapur, Patna-4
 Printer : S.Y. Computers and Printers,
 Alamganj, Patna-7



मनुष्य का उद्देश्य

इल्म को सीखें,
उसमें इज़ाफ़ा करें
और
उसे फैलाएं।

मनुष्य का संघर्ष

अल्लाह पर यकीन के साथ,
कुरआन की हद में रहते हुए,
कोई भी काम किया जाएगा तो
उसमें कामयाबी मिलेगी।

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ

नहीं कोई माबूद (पूज्य) सिवाय अल्लाह के।

مُحَمَّدٌ رَسُولَ اللَّهِ

मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं।

परिचय

अल—कुरआन, इस्लाम का पवित्र ग्रंथ, 114 सूराओं (अध्यायों) में विभाजित है। इसकी नियमित तिलावत (पाठ) को सुगम बनाने के लिए इसे विभिन्न भागों में विभाजित किया गया है, जैसे — 7 मंज़िल में ताकि इसे एक सप्ताह में पूरा पढ़ा जा सके, या फिर 30 पारों में जिससे एक महीने में संपूर्ण कुरआन की तिलावत संभव हो।

रुकू कुरआन का एक विषयगत विभाजन है, जिसमें आयतों (छंदों) को इस प्रकार समूहित किया गया है कि जब इन्हें नमाज़ की एक रकअत में पढ़ा जाए, तो एक संपूर्ण विषय पूर्ण हो जाए। कुरआन की 36 सूराएँ ऐसी हैं, जिनका पाठ केवल एक रुकू की लंबाई का है, जबकि अन्य लंबी सूराओं को कई रुकू में विभाजित किया गया है जैसे सूरह बक्रा में 40 रुकू हैं। संपूर्ण कुरआन में कुल 558 रुकू हैं।

ऐतिहासिक रूप से, इस विषयगत विभाजन का श्रेय

हज्जाज बिन यूसुफ़ (694–714 ईस्वी = 74–94 हिजरी) को दिया जाता है, जो उस समय इराक़ के गवर्नर थे। उन्होंने कुरआन के उच्चारण को स्पष्ट करने के लिए ए'राब (मात्रात्मक चिह्न, जैसे ज़बर, ज़ेर, पेश आदि) का समावेश किया, जिससे ग़ैर-अरबी भाषी लोग भी इसे सही उच्चारण के साथ पढ़ सकें।

इस पुस्तक में प्रस्तुत विषय-वस्तु "List of Rukus from Translation of the Holy Quran by Muhammad Farooq-e- Azam Malik" से ली गई है, जो इंटरनेट पर उपलब्ध है, और जिसका हिंदी अनुवाद चैटजीपीटी की मदद से किया गया है। मूल अरबी पाठ को एक विशेष सॉफ्टवेयर के माध्यम से लिखा गया है। अरबी पाठ का हिंदी अनुवाद "तर्जुमा-ए-कुरआन मजीद" के उर्दू संस्करण का लिप्यंतरण है, जिसे सैयद अबुल आला मौदूदी ने लिखा है और जिसे मरकज़ी मक्तबा इस्लामी पब्लिशर्स, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित किया गया है।

इस पुस्तक का उद्देश्य पाठकों को कुरआन के विषयगत अध्ययन में सहायता प्रदान करना है, ताकि वे इसके संदेशों को बेहतर समझ सकें और अपने जीवन में लागू कर सकें।

इस पुस्तक को तैयार करने में कई लोगों ने मेहनत की है, अल्लाह उनको इसका अज़्र दे, और इस पुस्तक के लिखने या छपने में जो भी कोताही या ग़लती हुई हो अल्लाह उसे माफ़ फ़रमाए। आमीन।

इस पुस्तक को और बेहतर बनाने का सुझाव आप gtrust786@gmail.com पर भेज सकते हैं।

गौसिया ट्रस्ट

रमज़ान 1446 हिजरी (मार्च 2025 ईस्वी)

विषय-सूची

रुकू	सूरह और आयत	विषय	पृष्ठ
1	1 फ़ातिहा 1-7	स्वयं अल्लाह द्वारा सिखाई गई मार्गदर्शन के लिए अल्लाह से प्रार्थना।	77
2	2 अल-बक्रा 1-7	कुरान सभी संदेहों से मुक्त है। यह ईश्वर से डरने वालों के लिए मार्गदर्शक है। जो लोग विश्वास को अस्वीकार करते हैं, उनके लिए चेतावनी व्यर्थ है।	78
3	2 अल-बक्रा 8-20	पाखंडियों और पाखंड के परिणाम। उनके कार्यों के उदाहरण।	79
4	2 अल-बक्रा 21-29	अल्लाह का अकेले उसकी पूजा करने का आदेश। कुरान को अल्लाह की पुस्तक होने का दावा। विश्वासियों के लिए इनाम। मच्छर की दृष्टांत, जो कई को भ्रमित कर सकती है और कई को प्रबुद्ध कर सकती है। आप अल्लाह से कैसे इनकार कर सकते हैं?	81
5	2 अल-बक्रा 30-39	आदम की रचना की कहानी। ज्ञान की विजय। स्वर्गदूतों ने आदम का सम्मान किया। शैतान ने आदम को स्वर्ग खोने का कारण बना दिया। आदम का पश्चाताप और उनकी माफी।	84
6	2 अल-बक्रा 40-46	मार्गदर्शन के लिए अल्लाह के रहस्योद्घाटन की आवश्यकता। इसराइल के बच्चों के साथ अल्लाह की वाचा। क्या आप दूसरों को सलाह देते हैं और खुद को भूल जाते हैं? धैर्य और नमाज़ से अल्लाह की मदद आती है।	87
7	2 अल-बक्रा 47-59	अपराधियों को निर्णय के दिन कोई रास्ता नहीं मिलेगा। इस्राएलियों को फ़िरौन के उत्पीड़न से मुक्ति। बछड़े की पूजा का इस्राएलियों का पाप। अपराधियों को मारने के माध्यम से उनका पश्चाताप। जो इस्राएली अल्लाह को सीधे देखना चाहते थे, उन्हें मृत्यु हो गई, फिर अल्लाह ने उन्हें फिर से जीवन दिया और उन्हें स्वर्गीय भोजन दिया। इस्राएलियों की असंतोष और अविश्वास।	89

रुकू	सूरह और आयत	विषय	पृष्ठ
8	2 अल-बक्रा 61-61	एक चट्टान से पानी उपलब्ध कराने का चमत्कार। इस्राएलियों ने स्वर्गीय भोजन को अस्वीकार कर दिया। इस्राएलियों की अवज्ञा और अपराध।	92
9	2 अल-बक्रा 62-71	सच्चे विश्वासियों को न तो डरने की आवश्यकता है और न ही पछतावा। इस्राएलियों ने अल्लाह के साथ वाचा की। सब्त के उल्लंघन के लिए दंड। अल्लाह के आदेश पर एक गाय की बलि देने में इस्राएलियों का रवैया।	93
10	2 अल-बक्रा 72-82	मृत शरीर को जीवन में वापस लाने का चमत्कार। इस्राएलियों की इस चमत्कार पर प्रतिक्रिया। किताब के लोग पाखंड के निराशाजनक शिकार हैं। उनमें से कुछ अपनी रचनाओं को अल्लाह से जोड़ते हैं। यहूदियों के झूठे दावे और उनका दंड।	96
11	2 अल-बक्रा 83-86	इस्राएलियों ने एक वाचा की और उसे तोड़ दिया। उनके अपने लोगों के साथ उनका व्यवहार।	99
12	2 अल-बक्रा 87-96	नबी ईसा (यीशु) का आगमन। यहूदियों ने जानबूझकर सत्य को अस्वीकार कर दिया। यहूदियों के विश्वास का स्वभाव। बछड़े के प्रति उनका प्रेम अल्लाह के प्रति उनके प्रेम से अधिक था। स्वर्ग पर केवल अपने अधिकार का यहूदियों का दावा परीक्षण में रखा गया।	101
13	2 अल-बक्रा 97-103	जिब्राईल और अन्य फ़रिश्तों के प्रति उनकी शत्रुता। इस्राएलियों की बेवफ़ाई। नबी सुलेमान (सुलेमान) के खिलाफ़ उनका आरोप। उनके द्वारा जादू-टोना सीखना।	105
14	2 अल-बक्रा 104-112	अल्लाह के नबी को संबोधित करने के शिष्टाचार। कुरान की आयतों को रद्द करना और/या बदलना। नबी से सवाल करना। यहूदियों और ईसाइयों की ईर्ष्या। परलोक के लिए खुला क्रेडिट खाता। स्वर्ग पर यहूदियों और ईसाइयों का झूठा दावा।	108
15	2 अल-बक्रा 113-121	यहूदियों और ईसाइयों की धार्मिक पूर्वाग्रहता। लोगों को मस्जिद में आने से न रोकने का आदेश। सभी दिशाएं अल्लाह की हैं। अल्लाह पर पुत्र होने का आरोप। कुरान सत्य का ज्ञान है। यहूदी और ईसाई आपसे कभी प्रसन्न नहीं होंगे।	111

रुकू	सूरह और आयत	विषय	पृष्ठ
16	2 अल-बक्रा 122-129	क्यामत के दिन का हिसाब-किताब। इब्राहीम को मानव जाति का नेता बनाया गया। काबा का महत्व। इब्राहीम की मक्का शहर के लिए दुआ। इब्राहीम और इस्माइल ने मक्का शहर से एक नबी नियुक्त करने की दुआ की।	113
17	2 अल-बक्रा 130-141	इस्लाम: इब्राहीम का धर्म। इब्राहीम की अपने पुत्रों को दी गई सलाह। सभी नबियों पर बिना भेदभाव के विश्वास करने का अल्लाह का आदेश। बपतिस्मा अल्लाह से है। इब्राहीम और उनके पुत्र न तो यहूदी थे और न ही ईसाई।	116
18	2 अल-बक्रा 142-147	किब्ला (नमाज़ में दिशा)। किब्ला बदलने का अल्लाह का आदेश। मक्का में काबा को नया किब्ला बनाया गया।	119
19	2 अल-बक्रा 148-152	नमाज़ के दौरान किब्ला के रूप में काबा की ओर मुंह करने का आदेश।	122
20	2 अल-बक्रा 153-163	अल्लाह की मदद मांगने का आदेश। शहीद मृत नहीं होते। अल्लाह विश्वासियों की आस्था को कठिनाइयों से परखेंगे। सफ़ा और मर्वा अल्लाह के प्रतीक हैं। जो सत्य को छिपाते हैं, उन पर अल्लाह, फ़रिश्तों और संपूर्ण मानव जाति की फटकार है।	123
21	2 अल-बक्रा 164-167	अल्लाह को पहचानने के लिए प्रकृति के संकेत। मुशिरकों को कठोर दंड मिलेगा। गुमराह नेताओं के अनुयायी क्यामत के दिन पछताएंगे।	126
22	2 अल-बक्रा 168-176	शैतान के कदमों का अनुसरण न करें। विश्वास को अंधविश्वास के रूप में स्वीकार न करें। निषिद्ध (हराम) भोजन। जो लोग सांसारिक लाभ के लिए सत्य को छिपाते हैं, वे आग के सिवा कुछ नहीं निगलते।	128
23	2 अल-बक्रा 177-182	इस्लामी प्रतिशोध के क़ानून। इस्लाम में धर्मपरायणता की परिभाषा। वसीयत को लागू करने का अल्लाह का आदेश।	131

रुकू	सूरह और आयत	विषय	पृष्ठ
24	2 अल-बक्रा 183—188	रोज़ा रखने का अनिवार्य आदेश। रमज़ान के महीने में कुरान के प्रकाशन और रोज़े का उल्लेख। अल्लाह अपने भक्तों के बहुत करीब हैं। रोज़े के महीने की रातों में पति-पत्नी का संबंध अनुमति प्राप्त है। रोज़े के समय का विवरण। रिश्ततख़ोरी एक पाप है।	133
25	2 अल-बक्रा 189—196	चंद्रमा को समय अवधि निर्धारित करने के लिए बनाया गया है। न्यायपूर्ण कारण के लिए लड़ने का आदेश। पवित्र महीनों में भी प्रतिशोध को वैध ठहराया गया है। दान देने का आदेश। हज और उमरा (मक्का की तीर्थयात्रा)।	136
26	2 अल-बक्रा 197—210	हज के दौरान प्रतिबंध। हज (तीर्थयात्रा) का पालन। पाखंड बनाम सच्चा विश्वास। इस्लाम में पूरी तरह से प्रवेश करने का आदेश।	140
27	2 अल-बक्रा 211—216	क़्यामत के दिन विश्वासियों का दर्जा अविश्वासियों से ऊपर होगा। मानवजाति एक समय में एक धर्म वाली एक ही जाति थी। स्वर्ग का रास्ता परीक्षाओं से होकर गुज़रता है। दान और न्यायपूर्ण कारण के लिए लड़ना अनिवार्य किया गया है।	143
28	2 अल-बक्रा 217—221	पवित्र महीनों के दौरान लड़ाई करना एक घोर पाप है। 'मुरतद' (जो इस्लाम से फिर जाता है) के लिए दंड। शराब पीना और जुआ खेलना पाप हैं (पहला निषेध आदेश)। अनाथों के साथ न्यायपूर्वक व्यवहार करने का आदेश। किसी मुश्रिक पुरुष या महिला से विवाह करना अवैध है।	146
29	2 अल-बक्रा 222—228	मासिक धर्म के दौरान पति-पत्नी के संबंधों की मनाही। अल्लाह के नाम की ली गई क़समों का दुरुपयोग न करें। पति-पत्नी के संबंधों को त्यागने के लिए चार महीने की सीमा निर्धारित की गई है। तलाक़ के बाद पुनर्विवाह के लिए प्रतीक्षा अवधि तीन मासिक धर्म चक्र है।	149
30	2 अल-बक्रा 229—231	तलाक़ से संबंधित कानून। तलाक़शुदा महिलाओं के साथ सम्मानजनक और दयालु व्यवहार का आदेश।	152

रुकू	सूरह और आयत	विषय	पृष्ठ
31	2 अल-बक्रा 232-235	तलाक़शुदा महिलाओं के पुनर्विवाह पर कोई प्रतिबंध नहीं है। शिशुओं को दूध पिलाने का आदेश। विधवाओं को पुनर्विवाह से पहले चार महीने और दस दिन प्रतीक्षा करने का आदेश दिया गया है।	154
32	2 अल-बक्रा 236-242	तलाक़ के मामले में दहेज से संबंधित आदेश। नमाज़ (प्रार्थना) की सुरक्षा का आदेश। "वसीयत और अंतिम इच्छा" को लागू करना अनिवार्य किया गया है।	157
33	2 अल-बक्रा 243-248	मृत्यु के भय के बिना अल्लाह के रास्ते में लड़ो क्योंकि मृत्यु से बचने का कोई मार्ग नहीं है। इस्राएलियों ने अल्लाह के मार्ग में लड़ने के लिए एक राजा की मांग की। अल्लाह ने तालूत को उनका राजा नियुक्त किया।	159
34	2 अल-बक्रा 249-253	इस्राएलियों की बहुसंख्यक संख्या अपने विश्वास की परीक्षा में असफल रही। विजय संख्या पर निर्भर नहीं करती। विश्वासियों की विजय के लिए दुआ। अल्लाह ने हजरत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की पैगंबरी की फिर से पुष्टि की। रसूलों के दर्जे।	162
35	2 अल-बक्रा 254-257	दान में खर्च करना। अल्लाह की विशेषताएँ "आयतुल-कुर्सी"। धर्म में कोई बाध्यता नहीं है। अल्लाह के वली बनाम शैतान के वली।	164
36	2 अल-बक्रा 258-260	इब्राहीम और नमरुद के बीच टकराव। मृतकों को जीवित करने का उदाहरण। इब्राहीम का मृत्यु के बाद जीवन पर सवाल।	166
37	2 अल-बक्रा 261-266	दान में खर्च करने की दृष्टांत। क्या चीज दान को व्यर्थ बना देती है। दान बनाम दिखावा।	169
38	2 अल-बक्रा 267-273	अपनी संपत्ति का सबसे अच्छा हिस्सा खर्च करें। अल्लाह का वादा बनाम शैतान का वादा। सार्वजनिक रूप से दान देना अच्छा है लेकिन निजी तौर पर देना बेहतर है। कौन दान प्राप्त करने के योग्य है।	171
39	2 अल-बक्रा 274-281	दान देने का इनाम। सूदखोरी की मनाही। सूद लेना अल्लाह और उसके रसूल के खिलाफ़ युद्ध की घोषणा के समान है।	174

रुकू	सूरह और आयत	विषय	पृष्ठ
40	2 अल-बक्रा 282-283	सभी व्यावसायिक लेन-देन-ऋण, कर्ज और उधार पर खरीदारी को लिखित रूप में दर्ज करने का आदेश। सभी प्रमुख व्यावसायिक लेन-देन में गवाह आवश्यक हैं। यदि लिखित रूप से दर्ज करना संभव नहीं है, तो एक सुरक्षा जमा लें-प्रतिज्ञा/बंधक।	176
41	2 अल-बक्रा 284-286	अल्लाह सभी कार्यों का हिसाब लेंगे। नबियों और मुसलमानों का सच्चा विश्वास। एक विश्वास करने वाले की दुआ।	179
42	3 अल-इमरान 1-9	यही अल्लाह हैं जिन्होंने तौरात, इंजील और कुरान को प्रकट किया। कुरान की निर्णायक आयतें बनाम रूपक आयतें। विश्वासियों की यह दुआ कि वे अपने विश्वास पर दृढ़ बने रहें।	181
43	3 अल-इमरान 10-20	धन या बच्चे अविश्वास के खिलाफ रक्षा नहीं कर सकते। बद्र की लड़ाई अल्लाह के अनुग्रह का एक संकेत थी। इस जीवन की सुख-सुविधाएँ बनाम परलोक का जीवन। अल्लाह का स्वयं के बारे में गवाह। अल्लाह की नजर में सच्चा धर्म केवल अल-इस्लाम है।	183
44	3 अल-इमरान 21-30	अविश्वास के लिए दर्दनाक दंड की चेतावनी। यहूदी और ईसाई अपनी स्वयं की गढ़ी हुई मान्यताओं से धोखा खा रहे हैं। यही अल्लाह हैं जो राज्य और सम्मान देते या छीनते हैं। अविश्वासियों को संरक्षक के रूप में लेने की मनाही।	186
45	3 अल-इमरान 31-41	नबी की आज्ञा का पालन करने और उनका अनुसरण करने का आदेश। आदम, नूह, इब्राहीम और इमरान के परिवारों को ऊंचा दर्जा दिया गया। मरियम (यीशु की माँ) का जन्म और उनकी परवरिश। जकरिया की दुआ कि उन्हें पुत्र प्रदान किया जाए, और अल्लाह ने उनकी दुआ कबूल की और उन्हें एक पुत्र याह्या (जॉन) दिया।	189
46	3 अल-इमरान 42-54	अल्लाह ने मरियम (मरियम) को अपनी सेवा के लिए चुना और उन्हें दुनिया की सभी महिलाओं से ऊपर उठाया। अल्लाह ने मरियम को एक महान पुत्र ईसा (यीशु) दिया। मरियम के पुत्र ईसा (यीशु) का जन्म। ईसा (यीशु) को दिए गए चमत्कार। ईसा (यीशु) के अनुयायियों को भी मुसलमान कहा गया। ईसा (यीशु) को मारने की साजिश।	193

रुकू	सूरह और आयत	विषय	पृष्ठ
47	3 अल-इमरान 55-63	अल्लाह का वादा कि ईसा (यीशु) को उन लोगों से मुक्त करेंगे जिन्होंने उन्हें अस्वीकार किया। पिता के बिना ईसा (यीशु) का जन्म आदम की रचना के समान है, जो बिना माता-पिता के हुई थी। "मुबहला": (यदि ईसा (यीशु) के जन्म पर विवाद हो तो अल्लाह के निर्णय के लिए बुलाना)।	196
48	3 अल-इमरान 64-71	यहूदियों और ईसाइयों को मुसलमानों के साथ उनके बीच की समान बातों पर एकत्र होने के लिए बुलाने का आदेश। इब्राहीम का धर्म इस्लाम था और मुसलमान उनके अनुयायी हैं।	199
49	3 अल-इमरान 72-80	यहूदियों और ईसाइयों के बीच पाखंडी। यहूदियों और ईसाइयों में कुछ अच्छे लोग हैं और कुछ बुरे। कुछ यहूदी और ईसाई अपने पवित्र ग्रंथों का उल्लेख करने में धोखाधड़ी करते हैं। ईसा (यीशु) ने कभी यह नहीं कहा कि उनकी पूजा की जाए, अल्लाह की जगह।	201
50	3 अल-इमरान 81-91	सभी नबियों के साथ अंतिम नबी (मुहम्मद) के संबंध में अल्लाह की वाचा। अल्लाह को अल-इस्लाम के अलावा कोई अन्य धर्म स्वीकार नहीं है। अविश्वासियों के लिए इनाम अल्लाह, फ़रिश्तों और पूरी मानवजाति की फटकार है। जो अविश्वासी अविश्वास की स्थिति में मरते हैं, उन्हें अनंतकाल तक दर्दनाक दंड मिलेगा।	204
51	3 अल-इमरान 92-101	धर्मपरायणता के मापदंड। इस्राएल के बच्चों के लिए वैध और अवैध भोजन। पृथ्वी पर अल्लाह का पहला घर। यहूदियों और ईसाइयों का अविश्वास। यहूदियों या ईसाइयों की आज्ञा का पालन न करें।	207
52	3 अल-इमरान 102-109	इस्लाम के अनुसार जियो, मुसलमान के रूप में मरो, और अपने आपस में विभाजित मत हो। मुसलमानों को फिरकों में बांटने वालों के लिए सजा।	210
53	3 अल-इमरान 110-120	मुसलमान सबसे उत्तम राष्ट्र हैं जो अच्छे कामों का आदेश देते हैं और बुराई से रोकते हैं। किताब वालों में कुछ धर्मपरायण लोग भी हैं। पाखंडी दान। घनिष्ठ मित्रता केवल विश्वासियों के साथ होनी चाहिए।	212

रुकू	सूरह और आयत	विषय	पृष्ठ
54	3 अल-इमरान 121—129	उहुद की लड़ाई से मिलने वाले सबक। विश्वासियों के लिए अल्लाह की मदद। नबी के पास पापियों को माफ़ करने का अधिकार नहीं है।	216
55	3 अल-इमरान 130—143	सूदखोरी की मनाही। अल्लाह दानशील लोगों से प्रेम करते हैं। विश्वासियों को ऊँचा दर्जा मिलने का वादा किया गया है। परीक्षा के बिना स्वर्ग नहीं मिलता।	218
56	3 अल-इमरान 144—148	मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अल्लाह के रसूल से अधिक कुछ नहीं हैं। नबियों और उनके अनुयायियों का उल्लेख। विश्वासियों की दुआ।	221
57	3 अल-इमरान 149—155	अविश्वासियों का अनुसरण न करें। रसूल की अवज्ञा का परिणाम। शोक के बाद अल्लाह ने शांति प्रदान की। मृत्यु से कोई बच नहीं सकता।	222
58	3 अल-इमरान 156—171	जीवन और मृत्यु अल्लाह के हाथ में है। निर्णय लेने से पहले परामर्श करें, और एक बार निर्णय ले लिया जाए तो दृढ़ रहें। अपना भरोसा अल्लाह पर रखें। रसूल की गरिमा। उहुद की लड़ाई से सीखे जाने वाले सबक। जो लोग अल्लाह के रास्ते में मारे गए हैं, वे मृत नहीं हैं।	226
59	3 अल-इमरान 172—180	उहुद में विश्वासियों का चरित्र। विश्वास को अविश्वास के लिए बदलने का दंड। विपरीत परिस्थितियाँ अल्लाह की परीक्षा हैं। कंजूस लोगों के लिए दंड।	231
60	3 अल-इमरान 181—189	यहूदियों ने अल्लाह का अपमान किया और उनके खिलाफ झूठ बोला। हर किसी को मरना है। विश्वासियों की परीक्षा। उस चीज का श्रेय लेने के लिए दंड जिसे आपने नहीं किया।	233
61	3 अल-इमरान 190—200	प्रकृति के संकेत। विश्वासियों की दुआ। अल्लाह द्वारा दुआओं की स्वीकार्यता। अविश्वासियों से धोखा न खाएं। धैर्य रखें और धैर्य में श्रेष्ठ बनें।	236
62	4 अन-निसा 1—10	मानवजाति की रचना। अनाथों की संपत्ति। पत्नियों की संख्या पर प्रतिबंध। दहेज का दायित्व। कमजोर मानसिकता वाले लोगों को संपत्ति न सौंपें। अनाथों को उनकी संपत्तियों का प्रबंधन करने के लिए प्रशिक्षित करें। विरासत के कानून।	239

रुकू	सूरह और आयत	विषय	पृष्ठ
63	4 अन-निसा 11-14	विरासत में निर्धारित हिस्से। पति या पत्नी की संपत्ति का उत्तराधिकार। अल्लाह की सीमाओं का पालन करने का आदेश।	243
64	4 अन-निसा 15-22	व्यभिचार की दोषी महिलाओं के लिए प्रारंभिक दंड का आदेश। स्वीकार्य बनाम अस्वीकार्य पश्चाताप। महिलाओं को संपत्ति के हिस्से के रूप में नहीं माना जाना चाहिए। महिलाओं से दहेज़ वापस न लें। अपने पिता की पत्नी से विवाह करने की मनाही।	246
65	4 अन-निसा 23-25	महिलाएं जिनसे विवाह निषिद्ध है – महरम संबंध। निषिद्ध और अनुमत विवाहों का विवरण। दासी महिलाओं से विवाह की अनुमति।	248
66	4 अन-निसा 26-33	अल्लाह मार्गदर्शन और माफी देना चाहते हैं। एक-दूसरे की संपत्तियों के स्वामित्व का सम्मान करें। घोर पापों से बचें और ईर्ष्या न करें। विरासत के कानून निश्चित हैं।	251
67	4 अन-निसा 34-42	पुरुष महिलाओं के रक्षक हैं। अवज्ञाकारी महिलाओं के लिए सुधारात्मक उपाय। पारिवारिक विवादों में मध्यस्थता। हुकूकुल-इबाद (अन्य मानवों के अधिकार)। क़यामत के दिन रसूलों के गवाह।	253
68	4 अन-निसा 43-50	शराब पीने की मनाही – (दूसरा आदेश)। तयम्मुम। किताब वालों का व्यवहार। किताब वालों को ईमान की दावत। मुश्रिकों को माफ़ नहीं किया जाएगा।	256
69	4 अन-निसा 51-59	किताब वाले अक्सर शैतान का पक्ष लेते हैं। अविश्वासियों और विश्वासियों का अंजाम। विश्वासियों को किसकी आज्ञा का पालन करना चाहिए?	259
70	4 अन-निसा 60-70	पाखंडियों का नबी के निर्णय के प्रति रवैया। जो नबी के निर्णय पर विवाद करता है, वह सच्चा विश्वास करने वाला नहीं है। परलोक में विश्वासियों को उत्तम संगति प्राप्त होगी।	262
71	4 अन-निसा 71-76	सशस्त्र संघर्ष (किताल) के लिए तैयार रहें। उत्पीड़ितों की सहायता के लिए किताल करें।	265

रुकू	सूरह और आयत	विषय	पृष्ठ
72	4 अन-निसा 77-87	अल्लाह से डरें, लोगों से नहीं। मृत्यु से बचने का कोई रास्ता नहीं है। रसूल की आज्ञा का पालन वास्तव में अल्लाह की आज्ञा का पालन है। कुरान के दिव्य प्रकाशन का प्रमाण। महत्वपूर्ण समाचारों को जिम्मेदार व्यक्तियों तक पहुँचाएं। अभिवादन का उत्तर और भी बेहतर अभिवादन के साथ दें।	267
73	4 अन-निसा 88-91	पाखंड और पाखंडियों के खिलाफ संघर्ष करें।	271
74	4 अन-निसा 92-96	विश्वासी की हत्या के लिए दंड और खूनबहा के कानून। निष्कर्ष पर पहुँचने से पहले उचित जांच करें। मुजाहिदीन का गैर-मुजाहिदीन पर दर्जा।	273
75	4 अन-निसा 97-100	उत्पीड़ितों को यदि संभव हो तो हिजरत करनी चाहिए। अल्लाह के रास्ते में हिजरत का इनाम।	275
76	4 अन-निसा 101-104	सलात-उल-कसर: यात्रा के दौरान नमाज़ को संक्षिप्त करना और युद्ध की स्थिति में नमाज़ अदा करना। नमाज़ निर्धारित समय पर पढ़ना अनिवार्य है।	277
77	4 अन-निसा 105-112	दिव्य मार्गदर्शन के आधार पर न्याय स्थापित करें। बदनामी और निर्दोषों पर झूठा आरोप लगाने के खिलाफ चेतावनी।	279
78	4 अन-निसा 113-115	नबी पर अल्लाह के विशेष उपकार। गुप्त परामर्श की मनाही और इसकी सीमित अनुमति।	280
79	4 अन-निसा 116-126	शिरक एक अक्षम्य पाप है। शैतान का झूठी इच्छाएँ पैदा करने का वादा। अल्लाह का धर्मपरायणों को स्वर्ग देने का वादा – अल्लाह से अधिक सच्चा वादा कौन कर सकता है? मुसलमान से बेहतर कोई नहीं।	282
80	4 अन-निसा 127-134	महिलाओं, अनाथ लड़कियों और असहाय बच्चों के लिए न्याय स्थापित करें। अपने लेन-देन में अल्लाह का डर रखें।	284
81	4 अन-निसा 135-141	न्याय के लिए दृढ़ रहने का आदेश। विश्वासियों को पूरे दिल से विश्वास करने की आवश्यकता है। गैर-इस्लामी सभाओं का बहिष्कार करें। पाखंडियों के दोहरे मापदंड होते हैं।	287

रुकू	सूरह और आयत	विषय	पृष्ठ
82	4 अन-निसा 142-152	पाखंडियों के गुण और पाखंड के कार्य। पाखंडी नरक की सबसे गहरी गहराई में होंगे। बुरे शब्द न बोलें। अल्लाह और उसके रसूलों की आज्ञा पालन में भेद न करें।	290
83	4 अन-निसा 153-162	अधिकांश यहूदी अल्लाह के आदेशों के अभ्यस्त पापी और उल्लंघनकर्ता हैं। यीशु न तो मारे गए और न ही सूली पर चढ़ाए गए। उनके पापों के लिए यहूदियों को दंडित किया गया। उनका एकमात्र उद्धार मुसलमान बनना है।	293
84	4 अन-निसा 163-171	यह कुरान वही संदेश लेकर आया है जो नूह, इब्राहीम, मूसा और ईसा को दिया गया था। अल-कुरान की प्रमाणिकता को स्वयं अल्लाह ने सत्यापित किया है। यदि आप सफलता प्राप्त करना चाहते हैं, तो इस प्रमाणिक प्रकाशन पर विश्वास करें। "त्रिमूर्ति" कहना बंद करें, अल्लाह ही एकमात्र ईश्वर हैं।	296
85	4 अन-निसा 172-176	ईसा एक नबी और अल्लाह के उपासक थे। मानव जाति को अल-कुरान के संदेश पर विश्वास करने के लिए कहा गया है। निःसंतान व्यक्तियों की विरासत से संबंधित कानूनी निर्णय।	299
86	5 अल-माईदा 1-5	अपनी ज़िम्मेदारियों को पूरा करें। धर्मपरायणता में सहयोग करें, पाप में नहीं। हराम - (निषिद्ध) मांस। अल-इस्लाम को पूर्ण और परिपूर्ण दीन (जीवन जीने का तरीका) घोषित किया गया है। सभी अच्छी और स्वच्छ चीजें वैध कर दी गई हैं। किताब वालों का खाना वैध है और उनकी महिलाओं से विवाह की अनुमति है।	301
87	5 अल-माईदा 6-11	वुजू (अभिषेक) करने का आदेश। तयम्मूम की अनुमति। सच्चे गवाह बनें और न्याय स्थापित करें। नबी और उनके प्रमुख साथियों को मारने की यहूदियों की साज़िश।	305
88	5 अल-माईदा 12-19	नमाज़ और ज़कात यहूदियों पर भी अनिवार्य थे। यहूदियों की धोखेबाज़ी की आदत। ईसाइयों ने भी अपनी किताब का अधिकांश हिस्सा उपेक्षित कर दिया है। यहूदियों और ईसाइयों को इस्लाम	307

रुकू	सूरह और आयत	विषय	पृष्ठ
		अपनाने का आदेश दिया गया है। मरियम के पुत्र ईसा न तो भगवान हैं और न ही भगवान के पुत्र। यहूदियों और ईसाइयों का खुद को भगवान के बच्चे होने का झूठा दावा। यहूदियों और ईसाइयों को मुसलमान बनने का निमंत्रण।	
89	5 अल-माईदा 20—26	यहूदियों का अपने नबी मूसा (मौसा) के साथ व्यवहार। यहूदियों पर 40 वर्षों तक अल्लाह की फटकार।	311
90	5 अल-माईदा 27—34	आदम के बेटों की कहानी, जिनमें से एक ने हत्या का पाप किया। किसी इंसान की हत्या के बारे में अल्लाह का आदेश। अल्लाह और उसके रसूल के खिलाफ युद्ध छेड़ने की सज़ा।	313
91	5 अल-माईदा 35—43	जिहाद सफलता का मार्ग है। कोई फिरौती अविश्वासियों को दंड से नहीं बचा सकती। चोरी के अपराध की सज़ा। केवल दिखावे की बातें न करें; सच्चे विश्वासियों बनें। यदि अल्लाह दंड देने का इरादा करते हैं, तो रसूल भी नहीं बचा सकते।	316
92	5 अल-माईदा 44—50	तौरात (तोरा) के कानून। जो अल्लाह के कानूनों से न्याय नहीं करते: (i) वे अविश्वासी हैं; (ii) वे अन्यायी हैं; (iii) वे सीमा लांघने वाले हैं। मानव जाति की विविधता। अल्लाह की रहस्योद्घाटन के आधार पर न्याय स्थापित करें।	319
93	5 अल-माईदा 51—56	यहूदियों या ईसाइयों को अपने संरक्षक के रूप में न लें। आपके संरक्षक मित्र हैं: अल्लाह, उनके रसूल, और आपके साथी विश्वास करने वाले।	322
94	5 अल-माईदा 57—66	उन लोगों से मित्रता न करें जो आपके धर्म का मज़ाक उड़ाते हैं। यहूदियों का धोखेबाज व्यवहार। यहूदियों का अल्लाह पर आरोप लगाना। यदि किताब वाले विश्वास करते, तो उन्हें दोनों दुनियाओं का सबसे अच्छा मिल सकता था।	325
95	5 अल-माईदा 67—77	रसूल का मिशन अल्लाह का संदेश पहुँचाना है। रसूलों के प्रति यहूदियों का रवैया। जो लोग कहते हैं कि ईसा भगवान हैं, वे अविश्वासी हैं। ईसा, मरियम के पुत्र, कौन थे?	328

रुकू	सूरह और आयत	विषय	पृष्ठ
96	5 अल-माईदा	इस्त्राएल की संतानों में अविश्वासियों पर दारुद और ईसा की जुबान से फटकार लगाई गई।	332
	78—86	ईसाई, मुसलमानों के यहूदियों और मूर्तिपूजकों से अधिक करीब हैं। अच्छे ईसाई सत्य को पहचानते हैं और इस्लाम स्वीकार करते हैं।	
97	5 अल-माईदा	स्वयं से हलाल चीजों को हराम न बनाएं। कसम तोड़ने के लिए कफ़ारा (दंड)। नशीले पदार्थों (शराब और ड्रग्स) और जुए की मनाही। रसूल का कर्तव्य केवल अल्लाह का संदेश पहुंचाना है।	334
98	5 अल-माईदा	हज के दौरान शिकार की मनाही। इहराम (हज की पोशाक पहनना)। हज के इहराम के दौरान शिकार करने के लिए कफ़ारा (दंड)। अल्लाह ने मक्का में काबा को मानवता के लिए एक शाश्वत मूल्य बनाया है।	336
99	5 अल-माईदा	मूसा की कौम की तरह सवाल न पूछें। इस्लाम में अंधविश्वास निषिद्ध हैं। अंतिम वसीयत और गवाहों की आवश्यक गवाही।	339
100	5 अल-माईदा	ईसा पर अल्लाह के उपकार और उन्हें दिए गए चमत्कार। ईसा के शिष्यों ने एक चमत्कार के रूप में खाने की मेज़ की फ़रमाइश की।	342
101	5 अल-माईदा	क़यामत के दिन ईसा की ईसाइयों के बारे में गवाही।	345
	116—120		
102	6 अल-अनआम	अल्लाह वही एकमात्र ईश्वर हैं, जो आसमान और अल-अनआम ज़मीन दोनों में सर्वशक्तिमान हैं। यदि अल्लाह ने एक लिखित पुस्तक और उसके साथ एक फ़रिश्ता भेजा होता, तो भी अविश्वासी विश्वास नहीं करते।	346
	1—10		
103	6 अल-अनआम	अल्लाह ने अपने लिए रहमत को अनिवार्य किया है, इसलिए वह इस दुनिया में सज़ा नहीं देते। क़यामत के दिन क्या सज़ा होगी? कुरान को नसीहत देने और यह घोषित करने के लिए प्रकट किया गया है कि केवल एक ही ईश्वर है: अल्लाह।	349
	11—20		

रुकू	सूरह और आयत	विषय	पृष्ठ
104	6 अल—अनआम	पक्षपात ने लोगों को अल्लाह के अलावा अन्य देवताओं की पूजा करने पर मजबूर कर दिया है। क्या मृत्यु के बाद जीवन निश्चित है?	352
105	21—30 6 अल—अनआम	जो लोग नबी मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का इनकार करते हैं, वे वास्तव में अल्लाह की आयतों का इनकार करते हैं। जो सुनते हैं, वे सत्य को स्वीकार करेंगे। प्रकृति के संकेतों से सीखने के लिए अपनी सामान्य समझ का उपयोग करें। क्या आप सच्चे संकट में केवल अल्लाह को ही नहीं पुकारते?	354
106	31—41 6 अल—अनआम	इस दुनिया में समृद्धि एक इनाम नहीं, बल्कि मोहलत है। यदि अल्लाह आपकी सुनने और देखने की क्षमता छीन लें, तो कौन इसे बहाल कर सकता है? रसूलों ने कभी यह दावा नहीं किया कि वे अदृश्य जानते हैं या वे फ़रिश्ते हैं।	358
107	42—50 6 अल—अनआम	अविश्वासियों को इस कुरान के माध्यम से नसीहत करें। सच्चा विश्वास अल्लाह की कृपा है और यह सांसारिक स्थिति पर निर्भर नहीं करता।	360
108	51—55 6 अल—अनआम	सिर्फ अल्लाह को न्याय करने का अधिकार है और केवल वही अदृश्य को जानता है।	362
109	56—60 6 अल—अनआम	अल्लाह ने आप पर निगरानी रखने वाले फ़रिश्ते नियुक्त किए हैं। अल्लाह ही हैं जो आपको आपदाओं से बचाते हैं। उन लोगों के साथ न बैठें जो अल्लाह की आयतों के बारे में बहस करते हैं। उन लोगों के साथ संगति न करें जो अपने धर्म को मज़ाक का विषय बनाते हैं।	363
110	61—70 6 अल—अनआम	विश्वासियों को मुसलमान बनने, नमाज़ स्थापित करने और अल्लाह से डरने का आदेश दिया गया है। इब्राहीम ने अपनी सामान्य समझ से प्रकृति का अध्ययन करके ईमान सीखा। मुश्रिकों का नबी इब्राहीम के साथ अल्लाह के बारे में तर्क।	367
111	71—82 6 अल—अनआम	नबी इब्राहीम के वंशज, जिनमें मूसा, ईसा और मुहम्मद शामिल हैं: इनमें से कोई भी मुश्रिक नहीं था।	370
	83—90		

रुकू	सूरह और आयत	विषय	पृष्ठ
112	6 अल—अनआम 91—94	अल्लाह वही हैं जिन्होंने तौरात और कुरान को प्रकट किया। जो लोग अल्लाह के खिलाफ झूठ गढ़ते हैं, उन्हें अपमानजनक दंड का सामना करना पड़ेगा।	374
113	6 अल—अनआम 95—100	अल्लाह की रचना से उदाहरण स्पष्ट रूप से मानवजाति की समझ के लिए प्रस्तुत किए गए हैं।	376
114	6 अल—अनआम 101—110	अल्लाह का बिना जीवनसाथी के पुत्र कैसे हो सकता है? स्पष्ट प्रमाण आपके पास आ चुके हैं, काश आप समझने के लिए अपनी आँखें खोलें। उन देवताओं का अपमान न करें जिनकी पूजा मुश्रिक करते हैं। मार्गदर्शन व्यक्तियों के दृष्टिकोण पर निर्भर करता है।	378
115	6 अल—अनआम 111—121	सभी अल्लाह के रसूलों को शैतान और उसके अनुयायियों का विरोध सहना पड़ा। केवल वही मांस खाएं जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया हो।	381
116	6 अल—अनआम 122—129	सिर्फ वही मांस खाएं जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया हो। जब अच्छे और बुरे को समान रूप से देखा जाता है, तो अपराधियों को उनका नेता बना दिया जाता है। जिसे अल्लाह मार्गदर्शन देना चाहते हैं, उसके सीने को इस्लाम के लिए खोल देते हैं। जिन्न और जिनसे प्रभावित होकर गुमराह हुए इंसान, सभी को जहन्नम में डाला जाएगा।	384
117	6 अल—अनआम 130—140	क्यामत के दिन काफिर (अविश्वासी) स्वीकार करेंगे कि वे वास्तव में काफिर थे। मुश्रिक अपने देवताओं को अल्लाह पर प्राथमिकता देते हैं। मुश्रिक अपनी स्वयं लगाई गई पाबंदियों को झूठा अल्लाह से जोड़ते हैं।	387
118	6 अल—अनआम 141—144	कृषि की ज़कात कटाई के दिन अदा करें। पशुओं पर झूठे रूप से थोपी गई पाबंदियों को स्पष्ट किया गया है।	390
119	6 अल—अनआम 145—150	पशुओं पर सही पाबंदियों को स्पष्ट किया गया है। यहूदियों द्वारा पशुओं पर लगाई गई पाबंदियों की व्याख्या। मुश्रिकों का मुश्रिक होने का बहाना।	392

रुकू	सूरह और आयत	विषय	पृष्ठ
120	6 अल-अनआम 151—154	इस्लाम में निषिद्ध चीजें बुनियादी नैतिक सिद्धांतों पर आधारित होती हैं।	394
121	6 अल-अनआम 155—165	अल्लाह की किताब आपके पास मार्गदर्शन के लिए आई है ताकि अल्लाह के सच्चे वचन के बारे में कोई बहाना न रहे। जो लोग धर्म को फिरकों में बांटते हैं, वे मुसलमान नहीं हैं। घोषणा करें: “मेरी नमाज़, मेरी भक्ति, मेरा जीवन और मेरी मृत्यु सब अल्लाह के लिए हैं।”	396
122	7 अल-अ'राफ़ 1—10	क्यामत के दिन रसूलों और जिन लोगों की ओर उन्हें भेजा गया था, दोनों से सवाल किया जाएगा।	400
123	7 अल-अ'राफ़ 11—25	आदम और इब्लीस की कहानी। इब्लीस ने आदम और उनकी संतानों को गुमराह करने की कसम खाई। शैतान ने चालाकी से आदम और हव्वा को अल्लाह की अवज्ञा करने के लिए बहकाया। उनका पश्चाताप और अल्लाह की शर्तों पर उनकी स्वीकार्यता।	402
124	7 अल-अ'राफ़ 26—31	आदम की संतान को चेतावनी दी गई है कि वे शैतान के जाल में न फंसें जैसे आदम फंसे थे। अल्लाह कभी भी अश्लीलता का आदेश नहीं देते।	405
125	7 अल-अ'राफ़ 32—39	अल्लाह का आदेश है कि उचित और शालीन पोशाक पहनें और अच्छा भोजन करें। आदम की संतानों को निर्देश दिया गया है कि वे अल्लाह द्वारा उनके रसूलों के माध्यम से प्रदान किए गए मार्गदर्शन का पालन करें।	407
126	7 अल-अ'राफ़ 40—47	स्वर्ग के द्वार अविश्वासियों के लिए नहीं खोले जाएंगे। केवल विश्वासियों को स्वर्ग में प्रवेश मिलेगा। स्वर्ग के निवासियों और नरक के कैदियों के बीच संवाद।	410
127	7 अल-अ'राफ़ 48—53	आशराफ़ के लोगों और नरक के कैदियों के बीच संवाद। नरक के कैदी स्वर्ग के निवासियों से पानी और भोजन की भीख मांगेंगे।	412

रुकू	सूरह और आयत	विषय	पृष्ठ
128	7 अल-अ'राफ़ 54-58	अल्लाह ही हैं जिन्होंने इस ब्रह्मांड की रचना की। अल्लाह से डर और उम्मीद के साथ दुआ करें।	415
129	7 अल-अ'राफ़ 59-64	नबी नूह का अपनी कौम को संबोधन, उनकी अविश्वासिता और उनका अंजाम।	416
130	7 अल-अ'राफ़ 65-72	नबी हूद का अपनी कौम को संबोधन, उनकी अविश्वासिता और उनका अंजाम।	418
131	7 अल-अ'राफ़ 73-84	नबी सालेह का अपनी कौम को संबोधन, उनकी अविश्वासिता और उनका अंजाम। नबी लूत का अपनी कौम को संबोधन, उनकी अविश्वासिता और उनका अंजाम।	420
132	7 अल-अ'राफ़ 85-93	नबी शूऐब का अपनी कौम को संबोधन, उनकी अविश्वासिता और उनका अंजाम। नबी शूऐब के साथ अविश्वासियों का व्यवहार।	423
133	7 अल-अ'राफ़ 94-99	कठिनाई और समृद्धि अल्लाह की ओर से याद दिलाने वाले हैं।	426
134	7 अल-अ'राफ़ 100-108	पिछली कौमों की कहानियां सबक सिखाने के लिए सुनाई गई हैं। नबी मूसा को फ़िरौन और उसके सरदारों को मार्गदर्शन देने के लिए भेजा गया था।	427
135	7 अल-अ'राफ़ 109-126	मूसा का फ़िरौन के जादूगरों के साथ सामना।	429
136	7 अल-अ'राफ़ 127-129	फ़िरौन का मूसा की कौम के लोगों से बदला।	432
137	7 अल-अ'राफ़ 130-141	फ़िरौन और उसके सरदारों पर अल्लाह का क्रोध और उनकी अंतिम तबाही। अल्लाह ने इस्राएल की संतानों को बचा लिया, लेकिन उन्होंने फिर भी एक ईश्वर पर विश्वास नहीं किया।	433
138	7 अल-अ'राफ़ 142-147	नबी मूसा का अल्लाह से संवाद। मूसा को तौरात (तोरा) की लिखित तख्तियां दी गईं। अहंकारी लोग मार्गदर्शन प्राप्त नहीं कर सकते।	436

रुकू	सूरह और आयत	विषय	पृष्ठ
139	7 अल-अ'राफ़ 148-151	इस्त्राएलियों ने अपनी चमत्कारिक मुक्ति देखने के बाद बछड़े की पूजा शुरू कर दी।	438
140	7 अल-अ'राफ़ 152-157	बछड़े की पूजा करने वालों पर अल्लाह का क्रोध उत्तरा। नबी मुहम्मद का आगमन तौरात और इंजील में वर्णित किया गया था।	440
141	7 अल-अ'राफ़ 158-162	मुहम्मद समस्त मानव जाति के लिए नबी हैं। अल्लाह ने मूसा की कौम को रेगिस्तान में भोजन और पानी प्रदान किया।	443
142	7 अल-अ'राफ़ 163-1171	यहूदियों की सब्त के दिन की परीक्षा। यहूदियों द्वारा सब्त का उल्लंघन और अल्लाह का क़हर। अल्लाह की माफ़ी के बारे में यहूदियों की ग़लत धारणा।	445
143	7 अल-अ'राफ़ 172-181	आदम की रचना के समय मानव जाति की यह गवाही कि अल्लाह ही उनका रब है। उन लोगों का उदाहरण जो अल्लाह की आयतों का इनकार करते हैं। गुमराह लोग जानवरों की तरह हैं, बल्कि उनसे भी बदतर।	448
144	7 अल-अ'राफ़ 182-188	जो लोग अल्लाह की आयतों का इनकार करते हैं, वे धीरे-धीरे विनाश के क़रीब जा रहे हैं। नबी के पास किसी को लाभ पहुंचाने या किसी हानि को टालने की शक्ति नहीं है।	451
145	7 अल-अ'राफ़ 189-206	अल्लाह ने पूरी मानव जाति को एक ही आत्मा से पैदा किया। उन देवताओं की वास्तविकता, जिनकी लोग अल्लाह के अलावा पूजा करते हैं। अल्लाह धर्मपरायणों का संरक्षक मित्र है। क्षमा दिखाओ, न्याय के पक्ष में बोलो और अज्ञानियों से दूर रहो। जब कुरान का पाठ किया जा रहा हो, तो इसे पूरी शांति के साथ सुनो।	453
146	8 अल-अनफ़ाल 1-10	युद्ध की लूट (गनीमत) से संबंधित आदेश। बद्र की लड़ाई, सत्य और असत्य के बीच की लड़ाई।	457
147	8 अल-अनफ़ाल 11-19	बद्र की लड़ाई के दौरान अल्लाह की मदद। मुसलमानों और काफ़िरों के बीच अल्लाह का फैसला।	459

रुकू	सूरह और आयत	विषय	पृष्ठ
148	8 अल-अनफ़ाल 20-28	अल्लाह की नज़र में सबसे बुरे लोग वे हैं जो अपनी सामान्य समझ का उपयोग नहीं करते। खुद को प्रलोभनों से बचाओ।	462
149	8 अल-अनफ़ाल 29-37	यदि आप अल्लाह से डरने वाले बन जाते हैं, तो वह आपको सही और ग़लत के बीच निर्णय लेने की बुद्धि प्रदान करेगा। काबा के वैध संरक्षक वही हैं जो अल्लाह से डरते हैं।	464
150	8 अल-अनफ़ाल 38-44	जो अविश्वासी इस्लाम स्वीकार करते हैं, उनके पिछले पाप माफ़ कर दिए जाते हैं। युद्ध की लूट के वितरण के नियम।	466
151	8 अल-अनफ़ाल 45-48	अल्लाह का आदेश कि दुश्मन के खिलाफ़ युद्ध के दौरान दृढ़ रहो।	469
152	8 अल-अनफ़ाल 49-58	विश्वासियों की विजय और अविश्वासियों की दर्दनाक मृत्यु। अल्लाह अपनी नेमतें तब तक नहीं बदलते जब तक लोग खुद को नहीं बदलते। संधियों का सम्मान करना चाहिए, जब तक कि उन्हें उचित सूचना के साथ तोड़ा न जाए।	470
153	8 अल-अनफ़ाल 59-64	अविश्वासियों के खिलाफ़ युद्ध के लिए तैयार रहने का आदेश। यदि दुश्मन शांति की ओर झुके, तो शांति स्थापित करो।	473
154	8 अल-अनफ़ाल 65-69	अल्लाह का वादा कि वह विश्वासियों को उनसे 2 से 10 गुना बड़ी सेनाओं पर विजय दिलाएंगे।	474
155	8 अल-अनफ़ाल 70-75	इस्लाम स्वीकार करने वाले युद्धबंदियों के साथ व्यवहार। गैर-मुस्लिम देशों में रहने वाले मुसलमान।	476
156	9 अत-तौबा 1-6	“हुदैबिया की संधि” को समाप्त करने की घोषणा।	478
157	9 अत-तौबा 7-16	अल्लाह का आदेश कि संधि का सम्मान तब तक करो जब तक अविश्वासी उसका सम्मान करें। यदि अविश्वासी संधि का उल्लंघन करें, तो उनके नेताओं के खिलाफ़ युद्ध करो।	480

रुकू	सूरह और आयत	विषय	पृष्ठ
158	9 अत-तौबा 17-24	मुशिरकों को मस्जिदों के संरक्षक होने से मना किया गया है। तीर्थ यात्रियों की सेवा अल्लाह, आखिरी दिन पर सच्चे विश्वास और जिहाद करने के बराबर नहीं है। यदि आपके पिता और भाई कुफ़्र (अविश्वास) को ईमान (विश्वास) पर प्राथमिकता देते हैं, तो उन्हें अपना मित्र न बनाएं।	483
159	9 अत-तौबा 25-29	अल्लाह की मदद विश्वासियों की गुणवत्ता के साथ होती है, संख्या के साथ नहीं। मुशिरकों के मस्जिद-अल-हरम में प्रवेश की मनाही।	486
160	9 अत-तौबा 30-37	यहूदी और ईसाई, जो अजरा और ईसा को भगवान का पुत्र कहते हैं, मुशिरक हैं। रब्बियों और पादरियों की तरह मत बनो, जो लोगों की संपत्ति का दुरुपयोग करते हैं। अल्लाह की किताब में महीनों की संख्या 12 है, जिनमें से 4 पवित्र हैं।	487
161	9 अत-तौबा 38-42	अल्लाह का आदेश कि आवश्यकता पड़ने पर अविश्वासियों के खिलाफ हथियार उठाएं।	490
162	9 अत-तौबा 43-59	जो लोग जिहाद में भाग नहीं लेते, वे पाखंडी हैं। अविश्वासियों के खिलाफ हथियार न उठाने के लिए पाखंडियों के बहाने।	492
163	9 अत-तौबा 60-66	ज़कात के वितरण की श्रेणियाँ। अल्लाह का आदेश कि नबी को कष्ट न पहुँचाएं। धर्म का मज़ाक उड़ाने वालों के लिए सज़ा।	497
164	9 अत-तौबा 67-72	पाखंडियों के कार्य और उनकी सज़ा। विश्वासियों के कार्य और उनका इनाम।	499
165	9 अत-तौबा 73-80	अल्लाह का आदेश कि पाखंडियों और अविश्वासियों के खिलाफ जिहाद करो। पाखंडियों का अल्लाह की नेमतों के प्रति व्यवहार।	502
166	9 अत-तौबा 81-89	पाखंडियों ने अविश्वासियों के खिलाफ युद्ध में भाग नहीं लिया। पाखंडियों के लिए जनाज़े की नमाज़ पढ़ने की मनाही।	504

रुकू	सूरह और आयत	विषय	पृष्ठ
167	9 अत-तौबा 90-99	युद्ध के मोर्चे से पीछे रहने के लिए वास्तविक छूट। जो लोग अल्लाह के रास्ते में सशस्त्र संघर्ष से बचने के लिए बहाने बनाते हैं (जब आवश्यकता हो), वे पाखंडी हैं।	507
168	9 अत-तौबा 100-110	पाखंडियों की विभिन्न श्रेणियाँ। अल-ज़कात संग्रह के लिए आदेश।	511
169	9 अत-तौबा 111-118	अल्लाह ने विश्वासियों के प्राण और धन को ख़रीद लिया है और बदले में उन्हें जन्नत का वादा किया है। मुश्रिकों के लिए माफ़ी न मांगो। अल्लाह ने उन तीन लोगों को माफ़ कर दिया जो पीछे रह गए थे लेकिन ईमानदार थे।	514
170	9 अत-तौबा 119-122	सच्चे विश्वास वाले वे हैं जो रसूल के जीवन को अपने जीवन पर प्राथमिकता देते हैं। धर्म की समझ प्राप्त करना आवश्यक है।	518
171	9 अत-तौबा 123-129	कुरान की आयतें विश्वासियों के ईमान को बढ़ाती हैं। नबी मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का चरित्र। अल्लाह द्वारा सिखाई गई एक दुआ।	519
172	10 यूनुस 1-10	अल-कुरान ज्ञान की पुस्तक है। अल्लाह ही हैं जिन्होंने इस ब्रह्मांड को बनाया। वही हैं जो सृष्टि की शुरुआत करते हैं और उसे दोहराते हैं। आसमान, ज़मीन, सूरज, चाँद, दिन और रात की रचना में उनकी महानता के संकेत हैं।	521
173	10 यूनुस 11-20	अल्लाह और उनकी आयतों के प्रति अन्याय करने वालों का व्यवहार। अल्लाह के अलावा अन्य देवी-देवता न तो आपको नुकसान पहुँचा सकते हैं और न ही लाभ। मानव जाति एक ही क़ौम थी जब तक उन्होंने विभिन्न पंथों का आविष्कार नहीं किया।	524
174	10 यूनुस 21-30	लोग कष्ट में अल्लाह को पुकारते हैं लेकिन आराम में रहते हुए उनके खिलाफ़ साज़िश करते हैं। इस सांसारिक जीवन का उदाहरण। अल्लाह आपको शांति के घर की ओर बुलाते हैं। जिन देवताओं की वे पूजा करते हैं, वे यह भी नहीं जानते कि उनकी पूजा की जा रही है।	528

रुकू	सूरह और आयत	विषय	पृष्ठ
175	10 यूनुस 31-40	अल्लाह और मुशिरकों द्वारा गढ़े गए अन्य देवताओं के बारे में तर्क और सत्य। यह कुरान अल्लाह की ओर से प्रकट किया गया संदेश है।	531
176	10 यूनुस 41-53	जो इस कुरान का इनकार करते हैं, वे परलोक में नुकसान उठाने वालों में से होंगे। हर कौम को उनके मार्गदर्शन के लिए एक रसूल भेजा गया था।	534
177	10 यूनुस 54-60	क़यामत के दिन अविश्वासियों के लिए कोई रास्ता नहीं होगा। अल-कुरान मानवता की समस्याओं के लिए रहमत, बरकत और इलाज है।	537
178	10 यूनुस 61-70	जो कुछ भी आप करते हैं, अल्लाह उसका गवाह है। मुशिरक ग़लत हैं, वे केवल अटकलों का पालन करते हैं और केवल झूठ का प्रचार करते हैं।	539
179	10 यूनुस 71-82	नबी नूह और उनकी कौम की कहानी। नबी नूह के वंशजों की ओर रसूल भेजे गए — इसी तरह नबी मूसा और हारून को फ़िरौन की ओर भेजा गया।	541
180	10 यूनुस 83-92	मूसा और फ़िरौन की कहानी। इस्राएल की संतानों को फ़िरौन की गुलामी से मुक्ति दिलाई गई।	544
181	10 यूनुस 93-103	इस्राएल की संतानों को जीवन की अच्छी चीज़ें प्रदान की गईं। क़हर देखने के बाद विश्वास किसी भी कौम को लाभ नहीं पहुंचा सका, सिवाय युनुस की कौम के। किसी को इस्लाम स्वीकार करने के लिए मजबूर करना मना है।	547
182	10 यूनुस 104-109	अल्लाह के अलावा कोई भी आपको नुकसान या लाभ नहीं पहुंचा सकता। घोषणा करें कि मार्गदर्शन आ चुका है — अब इसे मानना या न मानना आपका चुनाव है।	549
183	11 हूद 1-8	कुरान की शिक्षाएं। अल्लाह सभी प्राणियों का पालनहार है।	551

रुकू	सूरह और आयत	विषय	पृष्ठ
184	11 हूद 9—24	मनुष्य हमेशा अल्लाह का एहसानफरामोश रहता है, सिवाय विश्वासियों के। अल-कुरान नबी द्वारा गढ़ा हुआ नहीं है। किताब वाले (यहूदी और ईसाई) दो प्रकार के होते हैं: एक, जो सत्य को देख सकते हैं, और दूसरे, जो इसे न देखने का चयन करते हैं।	553
185	11 हूद 25—35	नबी नूह का अपनी कौम को संबोधन। नूह की कौम ने उन्हें चुनौती दी और अल्लाह के कहर की मांग की।	558
186	11 हूद 36—49	अल्लाह ने नूह को एक जहाज बनाने का आदेश दिया। अल्लाह ने नूह को आदेश दिया कि वह विश्वासियों और प्रत्येक प्रजाति के एक जोड़े को जहाज पर सवार कर लें। नूह, उनके बेटे और अल्लाह के बीच संवाद।	561
187	11 हूद 50—60	नबी हूद का अपनी कौम को संबोधन, उनकी प्रतिक्रिया और उसके परिणाम।	565
188	11 हूद 61—68	नबी सालेह का अपनी कौम को संबोधन, उनकी प्रतिक्रिया और उसके परिणाम।	567
189	11 हूद 69—83	नबी इब्राहीम को खुशखबरी: उन्हें एक पुत्र (इसहाक) और उनके बाद एक पोता (याकूब) दिया जाएगा। नबी लूत का अपनी कौम को संबोधन, उनकी प्रतिक्रिया और उसके परिणाम।	570
190	11 हूद 84—95	नबी शुऐब का अपनी कौम को संबोधन, जो अपने व्यापारिक लेन-देन में धोखाधड़ी कर रहे थे। उनकी नकारात्मक प्रतिक्रिया और उसके परिणाम।	573
191	11 हूद 96—109	फ़िरौन और उसके सरदारों का अंजाम जिन्हें चेतावनी दी गई थी, लेकिन उन्होंने उस पर ध्यान नहीं दिया।	577
192	11 हूद 110—123	मूसा को दी गई किताब के बारे में उनके अनुयायियों के विश्वास की कमी के कारण मतभेद उत्पन्न हुए। नेक कार्य बुराइयों को मिटाते हैं, और अल्लाह धर्मपरायणों के इनाम को व्यर्थ नहीं जाने देते। मानव जाति को दी गई स्वतंत्रता अल्लाह की इच्छा है।	579

रुकू	सूरह और आयत	विषय	पृष्ठ
193	12 यूसुफ़ 1—6	कुरान अरबी भाषा में प्रकट किया गया है। नबी यूसुफ़ (जोसेफ) की कहानी।	583
194	12 यूसुफ़ 7—20	इस कहानी में जिज्ञासुओं के लिए सबक हैं। यूसुफ़ के सौतेले भाइयों ने अपने पिता से उसे अपने साथ शिकार यात्रा पर भेजने को कहा और उसे एक अंधे कुएँ में फेंक दिया। उन्होंने अपने पिता से कहा कि यूसुफ़ को एक भेड़िए ने खा लिया। एक कारवां ने उसे अपहरण कर लिया, मिस्र ले गया और उसे बेच दिया।	584
195	12 यूसुफ़ 21—29	जिस मिस्री ने उन्हें खरीदा, वह एक अच्छा व्यक्ति था। उनके मालिक की पत्नी ने उन्हें बहकाने की कोशिश की, लेकिन अल्लाह ने उन्हें बचा लिया।	587
196	12 यूसुफ़ 30—35	शहर की महिलाओं ने अल-अज़ीज़ की पत्नी की ओर उंगलियां उठाना शुरू कर दिया। इसके परिणामस्वरूप, उसने उन्हें एक दावत पर आमंत्रित किया और यूसुफ़ को उनके सामने आने के लिए कहा।	590
197	12 यूसुफ़ 36—42	दो कैदियों ने सपने देखे और यूसुफ़ से उनकी व्याख्या पूछी। यूसुफ़ का अपने साथी कैदियों को संबोधन।	592
198	12 यूसुफ़ 43—49	मिस्र के राजा ने एक सपना देखा और उसकी व्याख्या पूछी। यूसुफ़ ने राजा के सपने की व्याख्या की।	594
199	12 यूसुफ़ 50—57	मिस्र के राजा ने महिलाओं का मामला सुना और पाया कि यूसुफ़ निर्दोष थे। यूसुफ़ की नियुक्ति राजा की मंत्रिमंडल के सदस्य के रूप में हुई।	596
200	12 यूसुफ़ 58—68	यूसुफ़ के भाई मिस्र में भोजन और अनाज लेने आए। यूसुफ़ ने उनसे अपने छोटे भाई बिन्यामीन को लाने को कहा। उन्होंने अपने पिता से अधिक अनाज प्राप्त करने के लिए बिन्यामीन को उनके साथ भेजने का अनुरोध किया। याकूब की अपने बेटों को दी गई सलाह।	598
201	12 यूसुफ़ 69—79	यूसुफ़ ने अपने भाई बेंजामिन से अपना परिचय दिया और उसे अपने पास रखने की योजना बनाई। बेंजामिन पर चोरी का आरोप लगाया गया ताकि उसे रोका जा सके।	601

रुकू	सूरह और आयत	विषय	पृष्ठ
202	12 यूसुफ़ 80—93	यूसुफ़ के भाइयों ने वापस जाकर अपने पिता को बेंजामिन की चोरी और उसे रोके जाने की घटना के बारे में बताया। वे यूसुफ़ के पास आए और भोजन तथा कुछ दान की विनती की। यूसुफ़ ने अपनी पहचान प्रकट की। उन्होंने अपने भाइयों को माफ़ कर दिया और अपने परिवार को बुलाने के लिए कहा।	604
203	12 यूसुफ़ 94—104	याकूब को अपने बेटे यूसुफ़ के बारे में शुभ समाचार मिला। इसके बाद उनका परिवार कनान से मिस्र स्थानांतरित हो गया। यूसुफ़ ने मुसलमान के रूप में जीने और मरने की प्रार्थना की।	607
204	12 यूसुफ़ 105—111	अधिकतर लोग जो अल्लाह पर ईमान रखते हैं, वे भी शिर्क करते हैं। सभी रसूल इंसान थे। यूसुफ़ की कहानी पूर्ववर्ती ग्रंथों की पुष्टि है।	610
205	13 राद 1—7	अल—कुरआन अल्लाह द्वारा प्रकट की गई है, जो आसमानों और जमीन के रचयिता हैं। पेड़, फल, सब्जियाँ और उनके स्वाद अल्लाह की निशानियाँ हैं।	612
206	13 राद 8—18	अल्लाह किसी कौम की हालत को तब तक नहीं बदलता जब तक वे खुद उसे बदलने की कोशिश नहीं करते। केवल अल्लाह से ही दुआ करें। अल्लाह के अलावा दूसरे उपास्य न तो किसी नुकसान का और न ही किसी फायदे का अधिकार रखते हैं। जो अपने रब के बुलावे का जवाब नहीं देंगे, उनके लिए बचने का कोई रास्ता नहीं होगा।	615
207	13 राद 19—26	जो लोग अल्लाह के साथ किया गया अपना वादा पूरा करते हैं, उनके लिए आखिरत में उत्कृष्ट ठिकाना होगा। जो लोग अपना वादा तोड़ते हैं, उन पर अल्लाह की फटकार और भयानक ठिकाना होगा।	619
208	13 राद 27—31	अल्लाह का ज़िक्र ही दिलों को सुकून प्रदान करता है। उसके सिवा कोई इश्वर नहीं, सारी चीज़ें उसके हुक्म के अधीन हैं।	621
209	13 राद 32—37	अल्लाह हर आत्मा पर बारीकी से नज़र रखता है। कुरआन को आसानी से समझने के लिए अरबी में उतारा गया है।	623

रुकू	सूरह और आयत	विषय	पृष्ठ
210	13 राद 38—43	कोई रसूल अल्लाह की अनुमति के बिना कोई चमत्कार दिखाने की शक्ति नहीं रखता। जब अल्लाह कोई हुक्म देता है, तो उसे पलटने वाला कोई नहीं होता — अल्लाह ही सभी योजनाओं का मालिक है।	626
211	14 इबराहीम 1—6	यह किताब इंसानियत को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने के लिए उतारी गई है। सभी रसूल अपनी क़ौम की भाषा में ही बात करते हैं। पैग़ंबर मूसा को अपनी क़ौम को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने के लिए भेजा गया था।	627
212	14 इबराहीम 7—12	यदि धरती के सभी निवासी काफ़िर बन जाएँ, तो इससे अल्लाह पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। मोमिनों को चाहिए कि वे अल्लाह पर ही भरोसा रखें।	629
213	14 इबराहीम 13—21	अल्लाह अत्याचारियों को सज़ा देता है और उन लोगों को आशीर्वाद देता है जो उसकी महानता से डरते हैं। अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन की रचना सत्य पर आधारित की है।	632
214	14 इबराहीम 22—27	शैतान का इंसानों पर कोई अधिकार नहीं है — वह केवल बुलाता है और लोग उसका अनुसरण करते हैं। जन्नत में अभिवादन होगा “सलाम”। “अच्छे शब्द” और “बुरे शब्द” की मिसालें दी गई हैं।	634
215	14 इबराहीम 28—34	जो लोग अल्लाह की नेमतों के प्रति कृतघ्नता दिखाते हैं, उन्हें जहन्नम में डाला जाएगा। अल्लाह ने आपको बेहिसाब नेमतें दी हैं।	636
216	14 इबराहीम 35—41	पैग़ंबर इब्राहीम की मक्का शहर और उसके निवासियों के लिए दुआ। पैग़ंबर इब्राहीम की वह दुआ जिसे मुसलमानों की पाँच वक्त की नमाज़ का हिस्सा बनाया गया है।	638
217	14 इबराहीम 42—52	यह कभी मत सोचो कि अल्लाह ज़ालिमों से बेख़बर है, या कि वह अपने रसूलों से किए गए वादे को तोड़ेगा। अल्लाह ही एकमात्र इश्वर है।	639
218	15 हिज़्र 1—15	कुरआन एक दिव्य पुस्तक है। क़यामत के दिन काफ़िर यह तमन्ना करेंगे कि काश वे मुसलमान होते। अल्लाह ने स्वयं कुरआन की हिफ़ाज़त की ज़िम्मेदारी ली है।	642

रुकू	सूरह और आयत	विषय	पृष्ठ
219	15 हिज्र 16—25	अल्लाह ने आसमानों को बनाया और उन्हें सजाया, और धरती पर इंसानी जीवन के लिए हर चीज़ को अनुकूल बनाया।	643
220	15 हिज्र 26—44	आदम की रचना की कहानीय फ़रिश्तों का उनके सामने सजदा करना और इब्लिस का सजदा करने से इनकार। इब्लिस और उसके अनुयायी जहन्नम के लिए निर्धारित हैं।	645
221	15 हिज्र 45—60	नेक लोगों को जन्नत का इनाम दिया जाएगा। पैग़ंबर इब्राहीम को दो फ़रिश्तों द्वारा बेटे की खुशखबरी दी गई।	647
222	15 हिज्र 61—79	वे ही फ़रिश्ते पैग़ंबर लूत के पास आए और अल्लाह के हुक्म के तहत समलैंगिक क़ौम को पत्थरों से मारकर ख़त्म कर दिया।	649
223	15 हिज्र 80—99	हिज्र की क़ौम को उनके कुफ़्र के लिए सज़ा दी गई। अल-फ़ातिहा को “सात बार बार पढ़े जाने योग्य आयतें” भी कहा जाता है। अल्लाह के हुक्मों को खुलकर बयान करो और मुशरिकों से मुँह मोड़ लो।	651
224	16 अन-नह्ल 1—9	अल्लाह ने अपनी वह्यी (प्रकाशन) इस उद्देश्य से उतारी है कि लोगों को चेतावनी दी जाए कि उसके सिवा कोई इश्वर नहीं है। उसने इंसानों के फ़ायदे के लिए मवेशियों को पैदा किया है।	653
225	16 अन-नह्ल 10—21	वही है जो आसमान से पानी उतारता है, पीने और खेती के लिए। उसने धरती को स्थिर करने के लिए पहाड़ों को रखा। अल्लाह ने इतनी नेमतें बख़्शी हैं कि तुम उन्हें गिन भी नहीं सकते।	655
226	16 अन-नह्ल 22—25	काफ़िर घमंडी होते हैं और उन्हें अपने इस रवैये के लिए ज़िम्मेदार ठहराया जाएगा।	657
227	16 अन-नह्ल 26—34	क़यामत के दिन अल्लाह घमंडियों को ज़लील करेगा और उन्हें जहन्नम में डालेगा, जबकि नेक लोगों को जन्नत का इनाम दिया जाएगा।	658
228	16 अन-नह्ल 35—40	अल्लाह ने रसूलों को इस बात की चेतावनी देने के लिए भेजा है कि काफ़िर यह बहाना न बना सकें: “अगर अल्लाह चाहता, तो हम किसी और की इबादत न करते।”	661

रुकू	सूरह और आयत	विषय	पृष्ठ
229	16 अन-नहल 41-50	अल्लाह ने अपने रास्ते में हिजरत करने वालों के लिए अच्छे ठिकाने का वादा किया है। क्या काफिर अल्लाह के गज़ब से खुद को महफूज़ समझते हैं?	663
230	16 अन-नहल 51-60	जब भी काफिर मुसीबत में होते हैं, तो वे केवल अल्लाह को पुकारते हैं। लेकिन जैसे ही अल्लाह उन्हें राहत देता है, वे फिर से शिर्क करने लगते हैं।	665
231	16 अन-नहल 61-65	अगर अल्लाह इंसानों को उनके गुनाहों की वजह से सज़ा देता, तो ज़ालिमों के पास एक जानवर भी न बचता। जिस तरह पानी सूखी ज़मीन को ज़िंदा करता है, उसी तरह कुरआन इंसानी रूह को ज़िंदगी देता है।	667
232	16 अन-नहल 66-70	जानवरों की ज़िंदगी, जैसे दूध देने वाले जानवर और मधुमक्खी, इंसानों के लिए एक सबक है।	668
233	16 अन-नहल 71-76	आपकी अपनी रचना की प्रक्रिया में एक सबक है। उन उपास्यों पर विश्वास क्यों करें जिनमें कुछ भी रचने की शक्ति नहीं है और अल्लाह, जो सृष्टिकर्ता है, पर अविश्वास क्यों करें?	670
234	16 अन-नहल 77-83	पक्षियों और जानवरों के जीवन में भी अल्लाह की निशानियाँ हैं।	672
235	16 अन-नहल 84-89	क़्यामत के दिन हर कौम से एक गवाह बुलाया जाएगा, और काफिर अपनी गढ़ी हुई झूठी उपासनाओं की सच्चाई का सामना करेंगे।	674
236	16 अन-नहल 90-100	अल्लाह इंसानों को, दूसरों के साथ भलाई करने और नज़दीकी रिश्तेदारों को देने का हुक्म देता है; और वह बेहयाई, बुराई और बगावत से रोकता है। जो तुम्हारे पास है, वह नाशवान है; और जो अल्लाह के पास है, वह शाश्वत है। जब तुम कुरआन की तिलावत करो, तो शैतान से अल्लाह की पनाह माँगो।	675
237	16 अन-नहल 101-110	काफ़िरों ने मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर यह इल्ज़ाम लगाया कि उन्हें कुरआन किसी आदमी ने सिखाया है, लेकिन जिस आदमी की वे बात करते हैं, वह ग़ैर-अरबी है, जबकि कुरआन फ़सीह अरबी में है।	678

रुकू	सूरह और आयत	विषय	पृष्ठ
238	16 अन-नहल 111-119	क़्यामत के दिन हर आत्मा को उसके किए का पूरा बदला दिया जाएगा। अपनी ज़बान से यह मत कहो कि क्या हलाल (वैध) है और क्या हराम (अवैध) – हलाल और हराम का फैसला अल्लाह की तरफ़ से होता है।	681
239	16 अन-नहल 120-128	इब्राहीम अपने आप में एक उम्मत थे। अल्लाह के रास्ते की ओर हिकमत के साथ बुलाओ; नसीहत करो और अगर ज़रूरत पड़े तो शालीनता के साथ तर्क करो।	683
240	17 बनी-इसराईल 1-10	अल्लाह ने मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को ब्रह्मांड की सैर कराई। अल्लाह ने इसराइली किताब में की गई भविष्यवाणी पूरी की कि वे धरती पर दो बार फ़साद करेंगे और हर बार उन्हें सज़ा दी जाएगी। कुरआन सीधी राह की तरफ़ रहनुमाई करता है।	685
241	17 बनी-इसराईल 11-22	क़्यामत के दिन हर इंसान को उसके कर्मों की किताब दी जाएगी। जो हिदायत चाहता है, वह अपने भले के लिए चाहता है, और जो भटकता है, वह अपने नुक़सान के लिए भटकता है। जो इस दुनिया की अस्थायी चीज़ों की ख़्वाहिश करता है, उसे यह सब यहीं दिया जाता है, लेकिन आख़िरत में उसे जहन्नम का सामना करना पड़ेगा।	687
242	17 बनी-इसराईल 23-30	अल्लाह का ईमान वालों को हुक्म: तुम उसके सिवा किसी की इबादत न करो, अपने माता-पिता के प्रति आज्ञाकारी रहो, अपने रिश्तेदारों और पूरे समाज के साथ भलाई करो।	690
243	17 बनी-इसराईल 31-40	बच्चों को गरीबी के डर से क़त्ल न करो, न ही व्यभिचार करो। किसी को न मारो और न ही अनार्थों की संपत्ति हड़प करो। अपने वादों को पूरा करो, पूरा नाप-तौल दो, किसी की आँख मूँदकर अनुकरण न करो, घमंड से न चलो, और अल्लाह के साथ किसी और को उपासना का भागीदार न बनाओ। अगर अल्लाह के अलावा और भी भगवान होते, तो वे उसे गद्दी से हटाने की कोशिश करते।	692

रुकू	सूरह और आयत	विषय	पृष्ठ
244	17 बनी-इसराईल 41-52	आखिरत पर ईमान लाना कुरआन को समझने के लिए ज़रूरी है। मृत्यु के बाद एक जीवन है।	694
245	17 बनी-इसराईल 53-60	मोमिनों को केवल अच्छे शब्द ही बोलने चाहिए। गढ़े हुए भगवान में तुम्हें किसी भी संकट से बचाने की शक्ति नहीं है। मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को पहले नबियों की तरह निशानियाँ न भेजे जाने का कारण।	697
246	17 बनी-इसराईल 61-70	शैतान, उसका इंसानों के साथ दुश्मनी करना और उन्हें बहकाने की उसकी कसम। अल्लाह ने तुम्हारे लिए ज़मीन और समुद्र पर सवारी की सुविधाएं प्रदान की हैं।	699
247	17 बनी-इसराईल 71-77	हर क़ौम और उसके नेताओं की जवाबदेही होगी। इस्लामी क़ानून और सिद्धांतों के मामलों में कोई समझौता स्वीकार्य नहीं है।	701
248	17 बनी-इसराईल 78-84	रोज़ाना पाँच वक्त की नमाज़ और एक अतिरिक्त नमाज़ (जिसे तहज्जुद कहा जाता है) पैग़ंबर के लिए है। कुरआन मोमिनों के लिए शिफ़ा और रहमत है।	703
249	17 बनी-इसराईल 85-93	अर-रूह (आत्मा) अल्लाह के हुक्म से है। कोई भी कुरआन जैसा नहीं बना सकता।	704
250	17 बनी-इसराईल 94-100	अल्लाह ने इंसानों के पास एक इंसानी रसूल भेजा है; अगर धरती पर रहने वाले फ़रिश्ते होते, तो अल्लाह एक फ़रिश्ते को रसूल बनाकर भेजता। हिदायत केवल अल्लाह की तरफ़ से है; काफ़िरों को क़यामत के दिन बहरे और अंधे बनाकर उठाया जाएगा। सिर्फ़ काफ़िर ही मौत के बाद की ज़िंदगी पर शक कर सकते हैं।	706
251	17 बनी-इसराईल 101-111	मूसा को नौ निशानियाँ दी गईं फिर भी लोग उन पर ईमान नहीं लाए। कुरआन को सत्य के साथ प्रकट किया गया है और यह सत्य के साथ अलग-अलग हिस्सों में उतारा गया, ताकि हर अवसर के अनुसार इसे समझना आसान हो।	708

रुकू	सूरह और आयत	विषय	पृष्ठ
		नमाज़ इतनी ऊँची आवाज़ में न पढ़ो कि यह शोर लगे, और न इतनी धीमी कि सुनाई न दे बीच का रास्ता अपनाओ।	
252	18 अल-कहफ़ 1-12	जो लोग कहते हैं कि अल्लाह ने कोई बेटा पैदा किया है, वे एक भयंकर झूठ बोल रहे हैं। गुफा वालों (अस्हाब-ए-कहफ़) की कहानी।	711
253	18 अल-कहफ़ 13-17	वे नौजवान थे जिन्होंने अल्लाह की एकता का सत्य घोषित किया। उन्हें भागकर एक गुफ़ा में शरण लेनी पड़ी।	713
254	18 अल-कहफ़ 18-22	वे गहरी नींद की अवस्था में थे। सैकड़ों साल बाद अल्लाह ने उन्हें जगाया। उनकी पहचान जीवन के बाद मौत के मुद्दे को सुलझाने के लिए प्रकट की गई। कितना अफ़सोस की बात है कि मुख्य संदेश को समझने के बजाय लोग उनकी संख्या को लेकर बहस कर रहे थे।	714
255	18 अल-कहफ़ 23-31	जब भी भविष्य में कुछ करने का वादा करो, हमेशा कहो: "इंशा अल्लाह (अगर अल्लाह चाहे तो)।" अल्लाह के शब्दों को बदलने का अधिकार किसी को नहीं है। ऐलान करो: "अल्लाह की तरफ़ से सत्य आ चुका है — तुम्हारी मर्जी है, उस पर ईमान लाओ या इनकार करो।"	717
256	18 अल-कहफ़ 32-44	ईमानदार और काफ़िर की तुलना।	720
257	18 अल-कहफ़ 45-49	दुनियावी जीवन की उपमा और उसका आखिरत के जीवन से संबंध।	722
258	18 अल-कहफ़ 50-53	जो लोग शैतान का अनुसरण करते हैं और शिर्क करते हैं, उनका अंजाम।	724
259	18 अल-कहफ़ 54-59	अल्लाह ने कुरआन में हर प्रकार की मिसालें दी हैं, ताकि लोग उसके संदेश को समझ सकें।	725
260	18 अल-कहफ़ 60-70	पैगंबर मूसा अल्लाह तआला द्वारा ख़िज़्र को दिए गए कुछ ज्ञान को सीखने के लिए उनकी तलाश में यात्रा पर निकले।	727

रुकू	सूरह और आयत	विषय	पृष्ठ
261	18 अल-कहफ़ 71-82	पैगंबर मूसा ख़िज़्र से नाव में छेद करने के बारे में सवाल करने से खुद को रोक नहीं सके। पैगंबर मूसा और ख़िज़्र की कहानी।	729
262	18 अल-कहफ़ 83-101	बादशाह जुल-करनैन की कहानी।	732
263	18 अल-कहफ़ 102-110	क़यामत के दिन मुशरिकों और मोमिनों का अंजाम। अल्लाह के शब्द अनगिनत हैं और उन्हें दर्ज नहीं किया जा सकता। मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) भी तुम्हारी तरह एक इंसान हैं।	735
264	19 मरियम 1-15	ज़करिया की कहानी और याह्या (जॉन) के जन्म और युवावस्था का वर्णन।	737
265	19 मरियम 16-40	मरियम की कहानी और ईसा (यीशु) के चमत्कारिक जन्म का वर्णन। मरियम अपने बच्चे (ईसा) को अपनी क़ौम के पास लेकर आई, और बच्चे ने पालने में ही अपनी माँ की रक्षा करने और अपने नबी होने के मिशन की घोषणा करने के लिए लोगों से बात की। ईसा (यीशु) अल्लाह के बेटे नहीं हैं, यह अल्लाह की महानता के अनुरूप नहीं है कि उसे किसी बेटे की आवश्यकता हो।	739
266	19 मरियम 41-50	इब्राहीम और उनके मूर्तिपूजक पिता की कहानी।	743
267	19 मरियम 51-65	मूसा, इस्माइल और इदरीस की पैगंबरी का वर्णन। अल्लाह के सभी पैगंबर दिव्य मार्गदर्शन प्राप्त थे और चुने हुए थे।	745
268	19 मरियम 66-82	मोमिनों और काफ़िरों का इस दुनिया में जीवन और आख़िरत में उनका अंजाम।	748
269	19 मरियम 83-98	क़यामत के दिन अल्लाह के सिवा कोई और माबूद तुम्हें बचा नहीं सकेगा। जो लोग कहते हैं कि अल्लाह ने कोई बेटा पैदा किया है, वे इतना भयानक झूठ बोलते हैं कि आसमान फट सकता है, ज़मीन चिर सकती है और पहाड़ टुकड़े-टुकड़े हो	751

रुकू	सूरह और आयत	विषय	पृष्ठ
		सकते हैं। अल्लाह ने कुरआन को इंसानों के लिए आसान बनाया है।	
270	20 ताहा 1—24	कुरआन उन लोगों के लिए नसीहत है जो अल्लाह, आसमानों और ज़मीन के रचयिता, से डरते हैं। पैगंबर मूसा पवित्र घाटी 'तूवा' में कोह-ए-तूर पर गए। अल्लाह ने उन्हें अपना रसूल चुना और फिरऔन की ओर भेजने का मिशन सौंपा।	752
271	20 ताहा 25—54	पैगंबर मूसा ने अल्लाह से दुआ की कि उनका सीना खोल दे, उनके काम को आसान कर दे, और उनकी ज़बान की रुकावट दूर कर दे, ताकि लोग उनकी बात समझ सकें। अल्लाह ने उनकी यह दुआ क़बूल की और उन्हें अपनी नेमतों की याद दिलाई। मूसा और फिरऔन के बीच संवाद का वर्णन।	755
272	20 ताहा 55—76	इंसानी जीवन चक्र का वर्णन। फिरऔन ने मूसा के चमत्कारों को जादूगरी का करतब कहकर उनका इनकार किया और सार्वजनिक रूप से अपने जादूगरों से सामना करने की चुनौती दी— मूसा ने इस चुनौती को स्वीकार कर लिया। मूसा और फिरऔन के जादूगरों के बीच सामना हुआ। जादूगरों ने मूसा का चमत्कार देखकर इस्लाम क़बूल कर लिया। जादूगरों और फिरऔन के बीच हुए संवाद का वर्णन।	759
273	20 ताहा 77—89	इसराइल की औलाद को फिरऔन की गुलामी से आज़ादी दिलाई गई। जब पैगंबर मूसा कोह-ए-तूर पर अल्लाह से बातचीत के लिए गए, तो उनकी ग़ैरमौजूदगी में इसराइली बछड़े की पूजा करने लगे।	763
274	20 ताहा 90—104	मूसा का बुतपरस्ती के बारे में पूछताछ करना, सामिरी के बारे में उनका फैसला, सुनहरे बछड़े की घटना और अपनी क़ौम को किया गया उनका संबोधन। कुरआन एक नसीहत है, और आखिरत में यह दुनियावी जीवन सिर्फ़ एक दिन के बराबर लगेगा।	765

रुकू	सूरह और आयत	विषय	पृष्ठ
275	20 ताहा 105—115	क़यामत के दिन का एक दृश्य। कुरआन अरबी में सिखाने और याद दिलाने के लिए भेजा गया है, तो इसे पढ़ो और कहो: "ऐ मेरे रब, मेरे ज्ञान में इज़ाफ़ा कर।"	768
276	20 ताहा 116—128	आदम की रचना की कहानी और शैतान का बहकाना। अल्लाह ने आदम के गुनाह को माफ़ कर दिया, उन्हें चुना और सही रास्ते की हिदायत दी। जो लोग कुरआन नहीं पढ़ते और उसकी हिदायत का पालन नहीं करते, उन्हें क़यामत के दिन अंधा बनाकर उठाया जाएगा।	770
277	20 ताहा 129—135	दुनियावी लाभों में दूसरों से ईर्ष्या मत करो, बल्कि यदि तुम एक शुभ अंत चाहते हो तो अल्लाह की खुशी की तलाश करो। कुरआन अल्लाह की निशानी है, इसलिए क़यामत के दिन काफ़िरों के पास कोई बहाना नहीं होगा।	772
278	21 अल-अंबिया 1—10	हिसाब—किताब का दिन करीब आ रहा है, लेकिन अविश्वासी अब भी चेतावनी से बेख़बर हैं और इस पर विवाद कर रहे हैं कि एक इंसान रसूल कैसे हो सकता है।	774
279	21 अल-अंबिया 11—29	आसमान और ज़मीन की रचना कोई खेल नहीं है। अगर एक से अधिक भगवान होते, तो आसमान और ज़मीन में अव्यवस्था होती। सभी रसूलों को एक ही संदेश के साथ भेजा गया: 'अल्लाह के सिवा कोई भगवान नहीं है, तो केवल उसकी ही इबादत करो'।	776
280	21 अल-अंबिया 30—41	आसमान और ज़मीन एक समय में एक ही द्रव्य थे; अल्लाह ने उन्हें अलग किया, और उन्होंने सभी जीवित चीज़ों को पानी से बनाया। अल्लाह ने किसी इंसान को अमरता नहीं दी। अगर रसूलों को भी मरना है, तो अविश्वासी हमेशा कैसे जीवित रह सकते हैं?	779
281	21 अल-अंबिया 42—50	घड़े हुए देवता अपनी रक्षा भी नहीं कर सकते; वे अविश्वासियों को अल्लाह के खिलाफ कैसे बचाएंगे? न्याय का तराजू क़यामत के दिन स्थापित किया जाएगा। मूसा को अल-फ़ुरक़ान (सही और ग़लत का मापदंड) दिया गया था, और यही कुरान है।	781

रुकू	सूरह और आयत	विषय	पृष्ठ
282	21 अल-अंबिया 51-75	इब्राहिम ने अपने पिता और उनकी कौम की मूर्ति पूजा पर सवाल उठाया। इब्राहिम ने उनके सभी मूर्तियों को तोड़ दिया ताकि यह दिखा सके कि जो देवता अपनी रक्षा भी नहीं कर सकते, वे उनके किसी काम के नहीं हो सकते। उन्होंने इब्राहिम को जिंदा जलाने का निर्णय लिया, लेकिन अल्लाह ने आग को ठंडा और इब्राहिम के लिए आरामदायक रहने का हुक्म दिया। अल्लाह ने इब्राहिम को एक पुत्र (इसहाक) और फिर एक पोता (याकूब) दिया और दोनों को नबी बनाया।	783
283	21 अल-अंबिया 76-93	अल्लाह ने नूह की काफ़िरों के खिलाफ़ दुआ स्वीकार की। अल्लाह ने पैगंबर दाऊद और सुलेमान को ज्ञान, बुद्धि और राज दे दिए। अल्लाह ने पैगंबर अय्यूब की दुआ स्वीकार की और उनकी मुसीबत को दूर कर दिया। अल्लाह ने इस्माईल, जुलकिफ़ल, यूनूस, और ज़करिया की दुआओं को भी स्वीकार किया और मरियम को भी आशीर्वाद दिया। संपूर्ण मानव जाति एक भाईचारा है।	787
284	21 अल-अंबिया 94-112	जो कोई भी अच्छा कर्म करता है, बशर्ते वह आस्तिक हो, उसके प्रयास को अस्वीकार नहीं किया जाएगा। न्याय के दिन और अविश्वासियों व आस्तिकों का भाग्य। अल्लाह ने मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को सभी संसारों (मनुष्य, जिन्न और अन्य) के लिए रहमत बनाकर भेजा है।	790
285	22 अल-हज 1-10	क़्यामत की घड़ी का एक दृश्य। जीवन चक्र, इस दुनिया में जीवन और परलोक का जीवन। लोग अल्लाह के अलावा अन्य देवी-देवताओं को बिना ज्ञान और मार्गदर्शन के पुकारते हैं।	793
286	22 अल-हज 11-22	उन लोगों का व्यवहार जो विश्वास की कगार पर खड़े हैं। अल्लाह हमेशा अपने रसूलों की मदद करता है। आकाश और पृथ्वी के सभी निवासी अल्लाह के सामने सजदा करते हैं। अविश्वासियों के लिए आग के वस्त्र, उबलता हुआ पानी, और लोहे की गदा से मारने की सज़ा होगी।	796

रुकू	सूरह और आयत	विषय	पृष्ठ
287	22 अल-हज 23—25	उन लोगों का व्यवहार जो विश्वास की कगार पर खड़े हैं। अल्लाह हमेशा अपने रसूलों की मदद करता है। आकाश और पृथ्वी के सभी निवासी अल्लाह के सामने सजदा करते हैं। अविश्वासियों के लिए आग के वस्त्र, उबलता हुआ पानी, और लोहे की गदा से मारने की सज़ा होगी।	799
288	22 अल-हज 26—33	अल्लाह ने इब्राहीम को पवित्र घर (काबा) का स्थान बताया और उन्हें इसे बनाने का आदेश दिया, फिर मानव जाति को हज के लिए बुलाने का हुक्म दिया। शिर्क करना ऐसा है जैसे आसमान से गिरना, फिर शरीर को पक्षी उठा ले जाते हैं।	800
289	22 अल-हज 34—38	अल्लाह तक न तो कुर्बान किए गए जानवरों का मांस पहुँचता है और न ही उनका खून, बल्कि अल्लाह तक तुम्हारी परहेज़गारी पहुँचती है।	802
290	22 अल-हज 39—48	मोमिनों को आत्मरक्षा और अल्लाह के कारण के लिए लड़ने की अनुमति दी गई है। ऐ मोहम्मद, आप अकेले नहीं हैं जिन्हें झुठलाया गया, आपसे पहले सभी पैग़म्बरों को भी झुठलाया गया था। आपके रब का एक दिन आपकी गिनती के 1000 वर्षों के बराबर है।	804
291	22 अल-हज 49—57	सत्य को स्वीकार करने वालों को माफ़ किया जाएगा, जबकि अन्य को दंडित किया जाएगा। शैतान ने सभी रसूलों की इच्छाओं में छेड़छाड़ की, लेकिन अल्लाह ने ऐसी दखलअंदाज़ी को समाप्त कर दिया। क़यामत के दिन, अल्लाह स्वयं सभी का न्यायाधीश होगा।	806
292	22 अल-हज 58—64	जो लोग अल्लाह की खातिर हिजरत करते हैं, उन्हें भरपूर इनाम दिया जाएगा। अल्लाह ही एकमात्र सच्चा है, अन्य सभी देवी-देवता झूठे हैं।	808
293	22 अल-हज 65—72	अल्लाह वही है जिसने तुम्हें जीवन दिया, तुम्हें मौत देता है और तुम्हें दोबारा जीवन देगा ताकि वह अपना न्याय सुनाए। अल्लाह तुम्हारे बीच उन मामलों में फैसला करेगा जिनमें तुम मतभेद करते हो।	810

रुकू	सूरह और आयत	विषय	पृष्ठ
294	22 अल-हज 73-78	अल्लाह के अलावा अन्य देवी-देवताओं में एक मक्खी जैसी प्राणी को बनाने की भी शक्ति नहीं है। अल्लाह ने विश्वासियों को पहले की किताबों में और इस (कुरआन) में भी मुसलमान कहा है।	812
295	23 अल-मोमिनून 1-22	सच्चे मोमिनों की विशेषताएँ। मानव सृजन के विभिन्न चरण। अल्लाह ने आकाश, वनस्पतियों, पेड़ों और जानवरों को मानव जाति के लाभ के लिए बनाया है।	814
296	23 अल-मोमिनून 23-32	पैगंबर नूह को उनकी कौम का मार्गदर्शन करने के लिए भेजा गया था - उन्होंने नूह पर विश्वास नहीं किया, और परिणामस्वरूप अल्लाह ने सभी अविश्वासियों को महान बाढ़ में डुबो दिया। पैगंबर नूह के बाद, अल्लाह ने उनकी कौम का मार्गदर्शन करने के लिए हुद को भेजा।	816
297	23 अल-मोमिनून 33-50	उन्होंने पैगंबर हुद को झूठा कहा; परिणामस्वरूप अल्लाह ने उन्हें एक भयंकर धमाके के साथ नष्ट कर दिया। हुद के बाद, अल्लाह ने अन्य लोगों के पास रसूलों को भेजा; उन लोगों ने भी इनकार किया और उन्हें भी इसी तरह की सज़ा का सामना करना पड़ा। मूसा को फिरऔन और उसके सरदारों के पास भेजा गया; उन्होंने भी इनकार किया और विनाश का सामना किया।	818
298	23 अल-मोमिनून 51-77	अल्लाह ने फ़रमाया: 'वास्तव में, तुम्हारा धर्म एक ही धर्म है; मैं तुम्हारा रब हूँ, तो केवल मुझसे डरो।' अल्लाह ने किसी आत्मा पर उसकी सामर्थ्य से अधिक बोझ नहीं डाला है। जो लोग परलोक पर विश्वास नहीं करते, वे सदा सही रास्ते से भटकते रहेंगे।	821
299	23 अल-मोमिनून 78-92	अल्लाह ने तुम्हें कान, आँखें और दिल दिए हैं, लेकिन तुम बहुत कम श्रुक्रिया अदा करते हो। यहां तक कि अविश्वासी भी अल्लाह के अस्तित्व को मानते हैं। अल्लाह ने न तो किसी को बेटा बनाया है और न ही उसके अलावा कोई और ईश्वर है।	825

रुकू	सूरह और आयत	विषय	पृष्ठ
300	23 अल-मोमिनून 93-118	बुराई का जवाब भलाई से दो और शैतान के प्रलोभनों से बचने के लिए अल्लाह की पनाह मांगो। गुनाहगार यह इच्छा करेंगे कि उन्हें इस दुनिया में वापस भेजा जाए ताकि वे सही रास्ता अपनाएं, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी होगी। क़यामत के दिन ऐसा लगेगा जैसे इस दुनिया का जीवन एक दिन से भी कम का था। अविश्वासी कभी भी मुक्ति प्राप्त नहीं करेंगे।	827
301	24 अल-नूर 1-10	बलात्कार या व्यभिचार के लिए सज़ा। झूठी गवाही के लिए सज़ा। लिआन (व्यभिचार के मामले में यदि कोई गवाह न हो तो पत्नी पर आरोप लगाने की प्रक्रिया)।	831
302	24 अल-नूर 11-20	नबी की पत्नी के खिलाफ़ लगाए गए झूठे आरोप। अल्लाह ने नबी की पत्नी को बेगुनाह घोषित किया।	833
303	24 अल-नूर 21-26	अल्लाह ने मोमिनों को आदेश दिया कि वे शैतान का अनुसरण न करें और झूठे आरोपों और बदनामियों में भाग न लें।	835
304	24 अल-नूर 27-34	अपने घर के अलावा अन्य घरों में प्रवेश करने के लिए शिष्टाचार। पुरुषों और महिलाओं के मिश्रित आवागमन और सभाओं में मुसलमानों के लिए आवश्यक आचरण। अल्लाह का आदेश कि अविवाहित लोग विवाह करें। अल्लाह का आदेश कि जो गुलाम अपनी स्वतंत्रता खरीदना चाहें, उन्हें स्वतंत्रता प्रदान की जाए।	837
305	24 अल-नूर 35-40	अल्लाह आकाशों और धरती का नूर है। अल्लाह का नूर उन इबादतगारों में पाया जाता है, जो उनके भक्तों द्वारा उनकी याद के लिए बनाई जाती हैं। अविश्वासियों के कर्म रेगिस्तान में एक मृगतृष्णा की तरह हैं।	841
306	24 अल-नूर 41-50	आसमान और जमीन की हर चीज़ अल्लाह की तरबीह और हम्द करती है। अल्लाह ने हर जीवित प्राणी को पानी से बनाया है। जो लोग खुद को मोमिन कहते हैं लेकिन अपने कर्मों से अपने ईमान को साबित नहीं करते, वे सच्चे मोमिन नहीं हैं।	843

रुकू	सूरह और आयत	विषय	पृष्ठ
307	24 अल-नूर 51-57	सच्चे मोमिन वे हैं, जो जब अल्लाह और उसके रसूल की ओर बुलाए जाते हैं, तो कहते हैं: 'हमने सुना और मान लिया।'	846
308	24 अल-नूर 58-61	विवाहित जोड़े के कमरे में प्रवेश करने की अनुमति मांगने का शिष्टाचार। अपने घर के अलावा अन्य घरों में खाने का शिष्टाचार।	848
309	24 अल-नूर 62-64	ऐसी बैठकों में शामिल होने की आवश्यकता जो सामूहिक कार्यवाही की मांग करती हैं।	850
310	25 अल-फुरकान 1-9	बरकत वाला है अल्लाह, जिसने इस कुरआन को नाज़िल किया, जो सही और गलत के बीच फर्क करने का मापदंड है। गुनाहगार वे हैं जो सत्य को ठुकराते हैं और एक रसूल का इनकार करते हैं क्योंकि वह एक इंसान है।	852
311	25 अल-फुरकान 10-20	जो लोग क़यामत और मौत के बाद की ज़िंदगी को नकारते हैं, उन्हें भड़कती हुई आग में डाला जाएगा। क़यामत के दिन, जिन देवताओं को मुशरिक पुकारते हैं, वे किसी भी ईश्वरीय दावे से इनकार कर देंगे और मुशरिकों को उनके शिर्क के लिए ज़िम्मेदार ठहराएंगे।	854
312	25 अल-फुरकान 21-34	जो अविश्वासी आज फ़रिश्तों की मांग करते हैं, वही सज़ा देने वाले फ़रिश्तों और अपने बीच पत्थर की दीवार की मांग करेंगे। अविश्वासी क़यामत के दिन सही रास्ता न अपनाने पर पछताएंगे। अल्लाह कुरआन को एक साथ नाज़िल करने के बजाय धीरे-धीरे नाज़िल करने की हिकमत समझाते हैं।	856
313	25 अल-फुरकान 35-44	सभी कौमों जिन्होंने अल्लाह की वहियों और उसके रसूलों को ठुकराया, पूरी तरह से नष्ट कर दी गई। जिन्होंने अपनी इच्छाओं को अपना खुदा बना लिया है, वे केवल जानवरों के समान हैं।	859
314	25 अल-फुरकान 45-60	अल्लाह ने रात को एक चादर बनाया, नींद को आराम के लिए, और दिन को काम करने के लिए। अविश्वासियों के आगे न झुकोय कुरआन के साथ उनके खिलाफ़ जिहाद करो। उस सदैव जीवित (अल्लाह) पर भरोसा रखो, जो कभी नहीं मरेगा।	861

रुकू	सूरह और आयत	विषय	पृष्ठ
315	25 अल-फुरकान 61—77	सच्चे बंदों (मोमिनों) की विशेषताएँ।	864
316	26 अश-शुअरा 1—9	पैगंबर मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की मानवता के मार्गदर्शन के प्रति समर्पण।	867
317	26 अश-शुअरा 10—33	मूसा को रसूल नियुक्त करना और फिरऔन के साथ उनका संवाद। पैगंबर मूसा के चमत्कार।	868
318	26 अश-शुअरा 34—51	फिरऔन ने पैगंबर मूसा के चमत्कारों को जादू समझा और उनसे मुकाबला करने के लिए जादूगरों को बुलाया। एक चमत्कार देखने के बाद, सभी जादूगर इस्लाम में दाखिल हो गए।	870
319	26 अश-शुअरा 52—68	बनी इस्राइल की मुक्ति और फिरऔन व उसके सरदारों का विनाश।	873
320	26 अश-शुअरा 69—104	पैगंबर इब्राहीम की मूर्तिपूजा के खिलाफ उनकी दलीलों की कहानी। पैगंबर इब्राहीम की इस दुनिया और परलोक के लिए की गई दुआ। मुशरिक और उनके देवता दोनों जहन्नम में डाल दिए जाएंगे।	874
321	26 अश-शुअरा 105—122	पैगंबर नूह की कहानी, उनकी अपनी कौम के साथ बातचीत, और अविश्वासियों का विनाश।	877
322	26 अश-शुअरा 123—140	पैगंबर हुद की कहानी, उनकी अपनी कौम को दी गई नसीहत, और अविश्वासियों का विनाश।	879
323	26 अश-शुअरा 141—159	पैगंबर सालेह की कहानी, उनकी अपनी कौम को दी गई नसीहत, और अविश्वासियों का विनाश।	880
324	26 अश-शुअरा 160—175	पैगंबर लूत की कहानी, उनकी अपनी कौम को दी गई नसीहत, और अविश्वासियों का विनाश।	882
325	26 अश-शुअरा 176—191	पैगंबर शूऐब की कहानी, उनकी अपनी कौम को दी गई नसीहत, और अविश्वासियों का विनाश।	884

रुकू	सूरह और आयत	विषय	पृष्ठ
326	26 अश-शुअरा 192-227	कुरआन को अल्लाह ने फरिश्ता जिब्रईल के ज़रिए साफ़ अरबी भाषा में नाज़िल किया; जो लोग ईमान नहीं लाना चाहते, वे कभी ईमान नहीं लाएंगे। कुरआन को शैतानों ने नहीं उतारा है: यह न तो उनके हित में है और न ही उनकी ताक़त में। शैतान उन्हीं पर उतरते हैं जो बदनाम करने वाले गुनहगार होते हैं, जो अफ़वाहें सुनते हैं और झूठे होते हैं।	885
327	27 अन-नमल 1-14	कुरआन मोमिनों के लिए मार्गदर्शक और शुभ समाचार है। पैग़ंबर मूसा को रसूल के रूप में चुने जाने की कहानी। फ़िरऔन को नौ निशानियाँ दिखाई गईं, लेकिन उसने फिर भी इनकार किया और अल्लाह की सज़ा का भागी बना।	889
328	27 अन-नमल 15-31	पैग़ंबर सुलेमान की कहानी, जिन्हें अल्लाह ने ज़िन्न, इंसान, पक्षियों और हवाओं पर हुकूमत दी। हुदहुद पक्षी ने उन्हें सबा की रानी के बारे में ख़बर दी। राजा सुलेमान का सबा की रानी के नाम पत्र।	891
329	27 अन-नमल 32-44	सबा की रानी और सुलेमान के बीच संवाद। एक व्यक्ति, जिसके पास 'किताब का ज्ञान' था, ने रानी का तख़्त पलक झपकते ही राजा सुलेमान के पास पहुंचा दिया। सबा की रानी और उनकी क़ौम ने इस्लाम स्वीकार कर लिया।	894
330	27 अन-नमल 45-58	पैग़ंबर सालेह और उनकी अपनी क़ौम को दी गई नसीहत। उनकी क़ौम ने उन्हें मारने की साज़िश रची, लेकिन अल्लाह ने उन्हें बचा लिया और अविश्वासियों को नष्ट कर दिया। पैग़ंबर लूत ने अपनी क़ौम को समझाया, लेकिन उन्होंने ध्यान नहीं दिया, इसलिए उन्हें अल्लाह की सज़ा का सामना करना पड़ा।	898
331	27 अन-नमल 59-66	सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है और उसके रसूलों पर सलामती हो। ज़रा सोचो, क्या अल्लाह के अलावा कोई और माबूद है जिसने ब्रह्मांड में कुछ बनाया हो, मज़लूमों की दुआ क़बूल करता हो या सही रास्ता दिखाता हो?	900

रुकू	सूरह और आयत	विषय	पृष्ठ
332	27 अन-नमल 67-82	अविश्वासी अल्लाह की सृष्टि की शक्ति पर संदेह करते हैं। कुरआन उन मामलों को स्पष्ट करता है जिनमें बनी इस्राइल मतभेद रखते हैं। क़यामत की निशानियों में से एक निशानी।	902
333	27 अन-नमल 83-93	अल्लाह की वहियों को पूरी जानकारी हासिल किए बिना नकारो नहीं। क़यामत का एक दृश्य। जो हिदायत को स्वीकार करते हैं, वे अपने भले के लिए करते हैं, और जो भटकते हैं, वे अपने नुक़सान के लिए भटकते हैं।	905
334	28 अल-क़सस 1-13	पैग़ंबर मूसा की कहानी। फ़िरऔन ने अपनी बादशाहत बचाने के लिए बनी इस्राइल के बेटों को मारने की साज़िश रची, जबकि अल्लाह ने उनमें से एक को फ़िरऔन के ही घर में पालने का इंतज़ाम किया।	907
335	28 अल-क़सस 14-21	पैग़ंबर मूसा का युवावस्था, एक व्यक्ति की हत्या करने की भूल, और फ़िरऔन के प्रतिशोध से उनका बच निकलना।	910
336	28 अल-क़सस 22-28	उनका मदीयन पहुंचना, दस साल की नौकरी की शर्त को स्वीकार करना, और विवाह।	912
337	28 अल-क़सस 29-42	उनका तौर पर्वत पर पहुंचना, आग देखना, अल्लाह से बातचीत, और फ़िरऔन व उसके सरदारों के लिए रसूल के रूप में नियुक्ति। फ़िरऔन और उसके सरदारों ने इनकार किया; परिणामस्वरूप, अल्लाह ने उन्हें नष्ट कर दिया लेकिन बनी इस्राइल को बचा लिया।	915
338	28 अल-क़सस 43-50	पिछली नस्लों के विनाश की जानकारी दी गई है ताकि एक सबक सिखाया जा सके।	918
339	28 अल-क़सस 51-60	धार्मिक यहूदी और ईसाई कुरआन की सच्चाई को पहचान सकते हैं और महसूस करते हैं कि वे इसे सुनने से पहले भी मुसलमान थे। पैग़ंबर मार्गदर्शन नहीं दे सकते; यह अल्लाह है जो मार्गदर्शन देता है।	921

रुकू	सूरह और आयत	विषय	पृष्ठ
340	28 अल-कसस 61-75	क़यामत के दिन, अविश्वासी यह इच्छा करेंगे कि उन्होंने हिदायत को स्वीकार किया होता। अल्लाह ने मुशरिकों को अपनी शक्तियां जिसे चाहें सौंपने की अनुमति नहीं दी है।	923
341	28 अल-कसस 76-82	कारुन की कहानी, जो मूसा की क़ौम से था लेकिन उसने अल्लाह की हिदायत के खिलाफ़ बगावत की।	926
342	28 अल-कसस 83-88	कुरआन का नाज़िल होना अल्लाह की रहमत है, किसी को भी तुम्हें इससे दूर न करने दो।	929
343	29 अन-कबूत 1-13	अल्लाह मोमिनों की परीक्षा लेते हैं ताकि यह देखा जा सके कि कौन सच्चा है और कौन झूठा। अपने माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करो, लेकिन शिर्क के मामले में उनकी आज्ञा न मानो। जो कहते हैं, 'हमारा अनुसरण करो, हम तुम्हारा बोझ उठाएंगे,' वे झूठे हैं।	930
344	29 अन-कबूत 14-22	नूह ने अपनी क़ौम को 950 साल तक शिर्क न करने की नसीहत की। इसी तरह, इब्राहीम ने भी अपनी क़ौम को शिर्क न करने की नसीहत की।	933
345	29 अन-कबूत 23-30	इब्राहीम की क़ौम ने उन्हें ज़िंदा जलाने की कोशिश की, लेकिन अल्लाह ने उन्हें बचा लिया। इब्राहीम के भतीजे लूत ही अकेले थे जिन्होंने उनके साथ अपने ईमान की पुष्टि की। पैगंबर लूत को समलैंगिकों की क़ौम के लिए रसूल नियुक्त किया गया।	935
346	29 अन-कबूत 31-44	उन्होंने अल्लाह की हिदायत को ठुकरा दिया; परिणामस्वरूप, अल्लाह ने उन्हें सभी को नष्ट कर दिया। इसी तरह, आद, समूद, मदीयन और फिरऔन की क़ौमों ने अल्लाह के रसूलों को ठुकराया, जिसके परिणामस्वरूप उनका विनाश हुआ।	937
347	29 अन-कबूत 45-51	नमाज़ इंसान को अश्लील और बुरे कर्मों से दूर रखती है। किताब वालों से वाद-विवाद अच्छे तरीके से करो।	940

रुकू	सूरह और आयत	विषय	पृष्ठ
348	29 अन-कबूत 52-63	जो लोग झूठ पर विश्वास करते हैं और अल्लाह का इनकार करते हैं, वे नुकसान उठाने वाले होंगे। कितने ही जीव ऐसे हैं जो अपना रिज़्क़ साथ नहीं रखते? अल्लाह उन्हें भी देता है जैसे वह तुम्हें देता है।	942
349	29 अन-कबूत 64-69	इस दुनिया की जिंदगी केवल एक खेल और तमाशा है, असली जिंदगी तो आखिरत की जिंदगी है। जो हमारे रास्ते में कोशिश करते हैं, हम उन्हें अपने रास्ते की हिदायत देते हैं।	945
350	30 अल-रूम 1-10	रोमनों (ईसाइयों) की पराजय फारसियों (मूर्तिपूजकों) के हाथों मुसलमानों की अरब काफ़िरों के हाथों पराजय का संकेत मानी गई, इसलिए अल्लाह ने रोमनों की जीत और कुछ वर्षों में मुसलमानों की जीत की खुशख़बरी दी।	946
351	30 अल-रूम 11-19	अल्लाह ही है जो सृष्टि की शुरुआत करता है और फिर उसे दोहराता है, और उसी के पास सबको अंतिम फैसले के लिए लाया जाएगा।	948
352	30 अल-रूम 20-27	मनुष्य की रचना, उसकी संगिनी, आकाश, पृथ्वी, भाषा, रंग, नींद, काम की खोज, बिजली, बारिश और वनस्पतियों की वृद्धि — ये सब अल्लाह की निशानियाँ हैं।	949
353	30 अल-रूम 28-40	ज़ालिम अपनी इच्छाओं के पीछे चलते हैं बिना किसी वास्तविक ज्ञान के। सच्चे ईमान और फिरकों की प्रकृति। जब लोगों पर कोई विपत्ति आती है तो वे अल्लाह को पुकारते हैं, लेकिन जब वह उन्हें राहत देता है, तो देखो! वे शिर्क करने लगते हैं। आदेश है कि अपने रिश्तेदारों का हक् दो और इसी तरह ग़रीबों और ज़रूरतमंद मुसाफ़िरों की भी मदद करो।	951
354	30 अल-रूम 41-53	ज़मीन पर फ़साद इंसान के अपने कर्मों का परिणाम है। इसी तरह अल्लाह उन्हें उनके कर्मों का फल चखने देता है। अल्लाह ने लोगों के मार्गदर्शन के लिए अपने रसूल भेजे; कुछ ने ईमान लाया जबकि दूसरों ने इनकार किया। अल्लाह ने दोषियों को अपने अजाब में डाला और मोमिनों की मदद की।	955

रुकू	सूरह और आयत	विषय	पृष्ठ
355	30 अल-रूम 54-60	ऐ नबी, आप मुर्दों को नहीं सुना सकते। अल्लाह ही है जिसने आपको पैदा किया और क़यामत के दिन आपको न्याय के लिए पेश करेगा।	958
356	31 लुक़्मान 1-11	क़ुरआन हिकमत की किताब है, नेक लोगों के लिए मार्गदर्शक और बरकत है।	959
357	31 लुक़्मान 12-19	लुक़्मान ने अपने बेटे को शिर्क न करने की नसीहत की। माँ और माता-पिता के अधिकार। अपने माता-पिता की आज्ञा मानो लेकिन शिर्क के मामलों में नहीं। लुक़्मान की नैतिक व्यवहार और आपसी संबंधों के बारे में नसीहत।	961
358	31 लुक़्मान 20-30	गुमराही का मुख्य कारण अपने पूर्वजों का अंधानुकरण है। मुशरिक यह स्वीकार करते हैं कि अल्लाह ही आकाशों और धरती का सृष्टिकर्ता है। अगर सभी पेड़ कलम बन जाएं और सारे समुद्र स्याही, तो भी अल्लाह के शब्दों का लेखन समाप्त नहीं हो सकता। अल्लाह ही एकमात्र सच्चाई है, उसके अलावा जिनको लोग पुकारते हैं, वे सब झूठे हैं।	963
359	31 लुक़्मान 31-34	ऐ इंसानों, उस दिन से डरो जब न कोई बाप अपने बेटे के काम आएगा और न बेटा अपने बाप के। शैतान तुम्हें इस सच्चाई के बारे में धोखा न दे।	966
360	32 अस-सजदा 1-11	वह क़ुरआन जिसमें कोई शक नहीं, अल्लाह ने मोहम्मद को नाज़िल किया, ताकि वे उन लोगों को चेतावनी दें जिनके पास इससे पहले कोई चेतावनी देने वाला नहीं आया।	968
361	32 अस-सजदा 12-22	क़यामत के दिन अविश्वासी ईमान लाएंगे, लेकिन वह ईमान उनके किसी काम का नहीं होगा। उनके लिए विशेष इनाम है जो अपने बिस्तरों को छोड़कर डर और उम्मीद के साथ अपने रब को पुकारते हैं और सदका करते हैं।	970
362	32 अस-सजदा 23-30	क़ुरआन उस किताब के समान है जो पैग़ंबर मूसा को दी गई थी।	972

रुकू	सूरह और आयत	विषय	पृष्ठ
363	33 अल-अहज़ाब 1-8	अल्लाह से डरो और अविश्वासियों और मुनाफ़िकों की बात न मानो। केवल जुबान से कह देने से न तुम्हारी पत्नियां तुम्हारी मां बन जाती हैं और न ही गोद लिए हुए बेटे तुम्हारे असली बेटे बनते हैं। नबी की पत्नियां मोमिनों की मां हैं। अल्लाह की किताब में खून के रिश्तेदारों का हक़ दूसरों से ज़्यादा है।	974
364	33 अल-अहज़ाब 9-20	ख़ंदक़ की लड़ाई में अल्लाह की नेमतें। ख़ंदक़ की लड़ाई के दौरान मुनाफ़िकों का रवैया। जो लोग अविश्वासियों के खिलाफ़ लड़ाई में दूसरों को भाग लेने से हतोत्साहित करते हैं और खुद भी ऐसी लड़ाई में हिस्सा नहीं लेते, उनके पास ईमान नहीं है और उनके सारे कर्म बेकार हो जाएंगे।	976
365	33 अल-अहज़ाब 21-27	रसूल अल्लाह (मोहम्मद) की ज़िंदगी तुम्हारे लिए सबसे बेहतरीन नमूना है। अल्लाह ने मुसलमानों को मदीना और ख़ैबर में अविश्वासियों और यहूदी कबीलों पर जीत दिलाई।	980
366	33 अल-अहज़ाब 28-34	पैग़ंबर मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की पत्नियों को नसीहत। पैग़ंबर मोहम्मद की पत्नियों के लिए अल्लाह का हुक्म।	982
367	33 अल-अहज़ाब 35-40	मोमिनों के लिए यह शोभा नहीं देता कि वे अल्लाह और उसके रसूल के फैसले के बाद कोई विकल्प रखें। अल्लाह ने पैग़ंबर मोहम्मद को अपने गोद लिए हुए बेटे की तलाक़शुदा पत्नी से निकाह करने का हुक्म दिया। मोहम्मद तुम्हारे मदों में से किसी के बाप नहीं हैं, बल्कि अल्लाह के रसूल और अंतिम नबी हैं।	983
368	33 अल-अहज़ाब 41-52	पैग़ंबर को शुभ समाचार देने वाले, डराने वाले और रौशनी फैलाने वाले चिराग़ के रूप में भेजा गया है। तलाक़ जब इद्दत (दोबारा शादी के लिए प्रतीक्षा अवधि) की आवश्यकता नहीं होती। पैग़ंबर मोहम्मद के लिए चार पत्नियों से अधिक शादी करने की विशेष अनुमति। इस आदेश के बाद पैग़ंबर के लिए नई शादी करने या वर्तमान पत्नियों को बदलने पर पाबंदी।	986

रुकू	सूरह और आयत	विषय	पृष्ठ
369	33 अल-अहज़ाब 53-58	पैगंबर के घरों में बिना अनुमति प्रवेश न करो, और अगर बुलाया जाए, तो लंबी बातचीत में न लगे। रसूल की पत्नियों से उनकी मृत्यु के बाद निकाह न करो। अल्लाह खुद और उसके फ़रिश्ते पैगंबर पर दरुद भेजते हैं, ऐ मोमिनो, तुम भी ऐसा ही करो।	989
370	33 अल-अहज़ाब 59-68	औरतों के लिए हिजाब (पहनावे के नियम) का हुक्म। मुनाफ़िकों और अफ़वाह फैलाने वालों की सज़ा। अविश्वासी अपने नेताओं के लिए दोगुनी सज़ा की मांग करेंगे।	991
371	33 अल-अहज़ाब 69-73	ऐ मोमिनो! अल्लाह से डरो और हमेशा सही बात कहो। आसमान, ज़मीन और पहाड़ों ने अमानत (चुनने की आजादी) को लेने से इनकार कर दिया, लेकिन इंसान ने इसे स्वीकार कर लिया।	993
372	34 सबा 1-9	क़्यामत की घड़ी ज़रूर आएगी और फैसला किया जाएगा ताकि मोमिनो को इनाम दिया जाए और जो अल्लाह की वहियों को झुठलाते हैं, उन्हें सज़ा दी जाए। जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, वे बर्बाद हो जाएंगे।	995
373	34 सबा 10-21	पैगंबर दाऊद के साथ पहाड़ और पक्षी अल्लाह की हम्द व सना किया करते थे। अल्लाह ने पैगंबर सुलेमान के लिए हवाओं और ज़िन्नो को अधीन कर दिया था। ज़िन्नो के बारे में यह दावा कि वे ग़ैब (अनदेखा) जानते हैं, ग़लत है। सबा की क़ौम ने अल्लाह की नेमतों को ठुकरा दिया और आख़िरत का इनकार किया, इसलिए अल्लाह ने उन्हें इतिहास का एक किस्सा मात्र बना दिया।	997
374	34 सबा 22-30	अल्लाह के सामने कोई सिफ़ारिश किसी के काम नहीं आ सकती, सिवाय उसके जिसे वह अनुमति दे। पैगंबर मोहम्मद पूरी मानवता के लिए भेजे गए हैं।	1000
375	34 सबा 31-36	जो लोग कुरआन और पहले की किताबों का इनकार करते हैं, उनके गले में बेड़ियां डाली जाएंगी और उन्हें जहन्नम में फेंक दिया जाएगा। धन और औलाद अल्लाह की रज़ा के संकेत नहीं हैं।	1002

रुकू	सूरह और आयत	विषय	पृष्ठ
376	34 सबा 37—45	अल्लाह के करीब ईमान लाता है, न कि धन या औलाद। जो कुछ भी तुम उसके में खर्च करते हो, अल्लाह तुम्हें उसका बदला देगा। पैगंबर और कुरआन के बारे में अविश्वासियों की बातें।	1004
377	34 सबा 46—54	अविश्वासियों से कहा गया है कि वे अपनी ग़लत बातों पर विचार करें। सत्य आ चुका है, झूठ न तो कुछ पैदा कर सकता है और न ही कुछ बहाल कर सकता है। क़यामत के दिन, अविश्वासी ईमान लाना चाहेंगे, लेकिन यह उनके किसी काम का नहीं होगा।	1007
378	35 फ़ातिर 1—7	अल्लाह के अलावा कोई भी नेमतों को रोक या दे नहीं सकता। शैतान तुम्हारा दुश्मन है, इसलिए उसे दुश्मन ही समझो।	1008
379	35 फ़ातिर 8—14	वह व्यक्ति जो अपने बुरे कर्मों को अच्छा समझता है, उसे सही मार्ग पर नहीं लाया जा सकता। जो लोग इज़्ज़त की तलाश में हैं, वे जान लें कि असली इज़्ज़त अल्लाह की आज्ञा पालन में है। अल्लाह ने पानी, दिन, रात, सूरज और चाँद को इंसान के लाभ के लिए बनाया है। अल्लाह के अलावा जिन देवी-देवताओं को पुकारा जाता है, वे न सुन सकते हैं, न जवाब दे सकते हैं, और न ही खजूर की गुठली के छिलके के बराबर भी किसी चीज़ के मालिक हैं।	1010
380	35 फ़ातिर 15—26	मनुष्य अल्लाह का मोहताज है, जबकि अल्लाह किसी का मोहताज नहीं। जिंदा और मुर्दा बराबर नहीं हो सकते। तुम क़ब्र में दफ़नाए गए लोगों को नहीं सुना सकते।	1013
381	35 फ़ातिर 27—37	जो लोग कुरआन की तिलावत करते हैं, नमाज़ क़ायम करते हैं और ज़कात देते हैं, वे अल्लाह की रहमत और इनाम की उम्मीद कर सकते हैं। जो लोग इनकार करते हैं, उन्हें जहन्नम की आग में हमेशा के लिए दर्दनाक सज़ा मिलेगी।	1015

रुकू	सूरह और आयत	विषय	पृष्ठ
382	35 फ़ातिर 38—45	अल्लाह ने कोई ऐसी किताब नहीं भेजी जिसमें शिर्क (अल्लाह के अलावा किसी और की इबादत) की इजाज़त हो। बुरी साज़िश का अंजाम साजिश करने वाले पर ही पलटता है। अगर अल्लाह लोगों को उनके गुनाहों की वजह से सज़ा देता, तो उनके आसपास एक जानवर भी नहीं बचता।	1018
383	36 या'सीन 1—12	कुरआन अल्लाह की तरफ़ से नाज़िल की गई है ताकि लोगों को सचेत किया जा सके। पैग़ंबर से कहा गया है कि वह केवल उन्हीं को चेतावनी दे सकते हैं जो अल्लाह का डर रखते हैं।	1021
384	36 या'सीन 13—32	तीन पैग़ंबरों का उदाहरण, जिन्हें एक बस्ती में भेजा गया; वहां के सभी लोगों ने उन्हें झुठला दिया, सिवाय एक व्यक्ति के जो बस्ती के पार से आया। अल्लाह ने उस मोमिन को जन्नत से नवाज़ा और अविश्वासियों को नष्ट कर दिया।	1022
385	36 या'सीन 33—50	अल्लाह ने हर चीज़ को जोड़ों में बनाया है। दिन, रात, सूरज और चाँद; ये सभी अल्लाह के हुक्म से संचालित होते हैं। अविश्वासियों का रवैया अल्लाह के रास्ते में खर्च करने के प्रति नकारात्मक होता है।	1025
386	36 या'सीन 51—67	क़यामत के दिन का एक दृश्य। जन्नत के निवासियों के लिए अल्लाह का सलाम। अपराधी गुनाहगारों के लिए अल्लाह का संबोधन। क़यामत के दिन ज़ालिमों के हाथ और पैर उनके खिलाफ़ गवाही देंगे।	1028
387	36 या'सीन 68—83	कुरआन उन लोगों को चेतावनी देने के लिए है जो ज़िंदा हैं और अविश्वासियों पर इल्ज़ाम साबित करने के लिए। अल्लाह, जिसने इंसान को पैदा किया, क़यामत के दिन हिसाब-किताब के लिए उसे दोबारा ज़िंदा करेगा	1030
388	37 अस-सफ़ात 1—21	अल्लाह गवाही देता है कि तुम्हारा ईश्वर एक ही है और शैतानों को बुलंद दर्जे के फ़रिश्तों की महफ़िल तक पहुंच नहीं है। आख़िरत की ज़िंदगी और क़यामत का दिन हकीक़त हैं।	1033

रुकू	सूरह और आयत	विषय	पृष्ठ
389	37 अस—सफ़ात 22—74	क्यामत के दिन का एक दृश्य और गुनाहगारों के लिए सज़ा। गुमराह करने वाले नेताओं और उनके अनुयायियों के बीच का संवाद। जन्नत के नज़ारों में से एक दृश्य। जन्नत के एक निवासी की बातचीत का उदाहरण। जहन्नम के दृश्यों में से एक दृश्य।	1035
390	37 अस—सफ़ात 75—113	पैगंबर नूह ने दुआ की और अल्लाह ने उनकी दुआ को कबूल किया। पैगंबर इब्राहीम की कहानी, जिन्हें 'अल्लाह का दोस्त' कहा जाता है। पैगंबर इब्राहीम को परीक्षा के रूप में अपने इकलौते बेटे की कुर्बानी देने के लिए कहा गया, और उन्होंने इसे पूरा किया।	1039
391	37 अस—सफ़ात 114—138	अल्लाह ने पैगंबर मूसा और हारून पर अपनी नेमतें नाज़िल कीं। इल्यास (एलिएस) अल्लाह के रसूलों में से एक थे। लूत भी अल्लाह के रसूल थे।	1043
392	37 अस—सफ़ात 139—182	पैगंबर यूनस (योना) की कहानी। मुशरिकों का दावा कि फ़रिश्ते अल्लाह की बेटियां हैं और जिन्न अल्लाह के रिश्तेदार हैं, पूरी तरह झूठा है। अल्लाह ने अपने रसूलों और अपने भक्तों की मदद का वादा किया है।	1045
393	38 साद 1—14	कुरआन नसीहतों से भरी हुई किताब है। अविश्वासी घोर घमंड में हैं क्योंकि वे पैगंबरों को झूठा कहते हैं।	1048
394	38 साद 15—26	पैगंबर दाऊद की कहानी, जिनके साथ पहाड़ और पक्षी अल्लाह की हम्द के तराने गाते थे। उन दो विवादकर्ताओं की कहानी जो दाऊद के पास फ़ैसला कराने आए थे।	1050
395	38 साद 27—40	अल्लाह ने आसमान और ज़मीन को व्यर्थ नहीं बनाया। सुलेमान के घोड़ों की जांच की कहानी, जिन्हें जिहाद में इस्तेमाल किया जाना था। पैगंबर सुलेमान की दुआ कि उन्हें ऐसा राज्य दिया जाए जो किसी और को न दिया जाए।	1053

रुकू	सूरह और आयत	विषय	पृष्ठ
396	38 साद 41—64	पैगंबर अय्यूब (जॉब) की कहानी, उनकी बीमारी और उससे राहत। कुरआन एक याद दिलाने वाली किताब है, जो जन्नत के इनाम और जहन्नम की सज़ा के बारे में चेतावनी देती है।	1055
397	38 साद 65—88	रसूलों का मिशन लोगों को चेतावनी देना और यह ऐलान करना है कि अल्लाह के अलावा कोई माबूद नहीं है। आदम की सृष्टि की कहानी और इब्लीस (शैतान) की नाफरमानी।	1058
398	39 अजु—जुम्र 1—9	मुशरिक अपनी वलियों की इबादत को यह कहकर सही ठहराने की कोशिश करते हैं: 'वे हमें अल्लाह के करीब लाते हैं।' क़यामत के दिन, कोई भी बोझ उठाने वाला दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा।	1060
399	39 अजु—जुम्र 10—21	मोमिन जो अपने ईमान पर अमल नहीं कर सकते, उन्हें ऐसे स्थानों पर हिजरत करनी चाहिए जहाँ वे कर सकें। असली नुकसान उठाने वाले वे हैं जो क़यामत के दिन अपनी आत्मा और अपने परिवार को खो देंगे। जिसके खिलाफ़ सज़ा का फैसला हो चुका है, उसे कोई बचा नहीं सकता।	1064
400	39 अजु—जुम्र 22—31	कुरआन की आयतें आपस में संगत हैं, फिर भी इसकी शिक्षाओं को विभिन्न तरीकों से दोहराया गया है। अल्लाह ने कुरआन में हर प्रकार की मिसाल दी है ताकि लोग इसे स्पष्ट रूप से समझ सकें।	1066
401	39 अजु—जुम्र 32—41	अल्लाह पर झूठ गढ़ने वाले से बढ़कर ज़ालिम कौन हो सकता है? अगर अल्लाह तुम्हें नुक़सान पहुँचाना चाहे, तो कोई तुम्हें बचा नहीं सकता, और अगर वह तुम पर अपनी नेमतें बरसाना चाहे, तो कोई उन्हें रोक नहीं सकता।	1069
402	39 अजु—जुम्र 42—52	अल्लाह ही है जो लोगों की आत्माओं को उनकी मौत के वक्त और सोते समय वापस बुला लेता है। अगर ज़ालिमों के पास धरती के सारे खज़ाने और उससे भी अधिक हो, तो वे क़यामत के दिन खुद को बचाने के लिए खुशी-खुशी फ़िरोती के तौर पर उसे पेश कर देंगे।	1071

रुकू	सूरह और आयत	विषय	पृष्ठ
403	39 अज-जुम्र 53-63	जिन्होंने अपनी जान पर जुल्म किया है, उन्हें अल्लाह की रहमत से मायूस नहीं होना चाहिए, बल्कि जब तक मौका है, तौबा कर लेनी चाहिए।	1074
404	39 अज-जुम्र 64-70	अल्लाह की इबादत करो और उसके शुक्रगुजार बंदों में शामिल हो जाओ। क़यामत के दिन आमालनामा खुला रखा जाएगा और पूरी इंसानियत के साथ फ़ैसला किया जाएगा।	1076
405	39 अज-जुम्र 71-75	फ़ैसले के बाद, अविश्वासियों को जहन्नम की ओर हांका जाएगा और नेक लोगों को जन्नत की ओर ले जाया जाएगा।	1078
406	40 अल-मोमिन 1-9	अल्लाह की वहियों से केवल काफ़िर ही झगड़ते हैं। जो फ़रिश्ते अल्लाह के अर्श को उठाए हुए हैं, वे उन इंसानों के लिए दुआ करते हैं जो तौबा करते हैं और सही रास्ते पर चलते हैं।	1079
407	40 अल-मोमिन 10-20	क़यामत के दिन का एक दृश्य। अल्लाह छुपी हुई निगाहों और दिलों के गुप्त विचारों को जानता है।	1081
408	40 अल-मोमिन 21-27	जिन लोगों ने पैग़ंबरों और अल्लाह की वहियों को झुठलाया, वे सभी नष्ट कर दिए गए। पैग़ंबर मूसा को फ़िरऔन, हामान और कारून के पास भेजा गया, और फ़िरऔन ने पैग़ंबर मूसा को क़त्ल करने की योजना बनाई।	1084
409	40 अल-मोमिन 28-37	फ़िरऔन के एक रिश्तेदार का पैग़ंबर मूसा के पक्ष में किया गया बेहतरीन भाषण।	1086
410	40 अल-मोमिन 38-50	अल्लाह ने उस मोमिन को फ़िरऔन की साज़िशों से बचा लिया और फ़िरऔन की क़ौम को नष्ट कर दिया; अब उन्हें सुबह और शाम जहन्नम की आग के सामने पेश किया जाता है (क़ब्र का अज़ाब)।	1089
411	40 अल-मोमिन 51-60	अल्लाह अपने रसूलों और मोमिनों की इस दुनिया में भी मदद करता है और आख़िरत में भी उनकी मदद करेगा। तुम्हारे रब का फ़रमान है: 'मुझसे दुआ करो, मैं तुम्हारी दुआ क़बूल करूंगा।'	1092
412	40 अल-मोमिन 61-68	इबादत का हक़ सिर्फ़ अल्लाह को है, जो सारे ज़हानों का पैदा करने वाला और पालनहार है।	1094

रुकू	सूरह और आयत	विषय	पृष्ठ
413	40 अल-मोमिन 69-78	जो लोग अल्लाह की वहियों के बारे में बहस करते हैं, वे जल्द ही सच्चाई जान लेंगे। अल्लाह ने मोहम्मद से पहले कई रसूल भेजे; कुछ का ज़िक्र कुरआन में किया गया है और कुछ का नहीं।	1096
414	40 अल-मोमिन 79-85	चौपाए (पशु) समझदार लोगों के लिए अल्लाह की निशानियों में से हैं। अल्लाह का अज़ाब देखने के बाद ईमान लाना अविश्वासियों के लिए किसी काम का नहीं होगा।	1098
415	41 हा-मीम सजदा 1-8	कुरआन खुशख़बरी देने वाला और नसीहत करने वाला है। उन लोगों के लिए विनाश है जो आख़िरत को झुठलाते हैं और ज़कात अदा नहीं करते।	1099
416	41 हा-मीम सजदा 9-18	ज़मीन, पहाड़, मौसम, आसमान और आकाशों की सृष्टि की कहानी। अविश्वासियों के लिए चेतावनी और आद व समूद की कौमों पर अल्लाह के अज़ाब की मिसाल।	1101
417	41 हा-मीम सजदा 19-25	क़यामत के दिन लोगों के अपने कान, आँखें और ख़ाल उनके बुरे कर्मों के ख़िलाफ़ गवाही देंगे।	1103
418	41 हा-मीम सजदा 26-32	जो लोग कुरआन को नहीं सुनते, उन्हें सख़्त सज़ा दी जाएगी। जो कहते हैं कि हमारा रब अल्लाह है और फिर उस पर डटे रहते हैं, उनके संरक्षण के लिए फ़रिश्ते नियुक्त किए जाते हैं।	1105
419	41 हा-मीम सजदा 33-44	सबसे बेहतरीन बात वही है जो अल्लाह की ओर बुलाए, अच्छे कर्म करे और कहे: 'मैं मुसलमान हूँ।' अल्लाह की निशानियों की मिसाल। मोहम्मद से वही कहा गया जो पहले के पैग़म्बरों से कहा गया था; कुरआन मोमिनों के लिए हिदायत और शिफ़ा है।	1107
420	41 हा-मीम सजदा 45-54	पैग़म्बर मूसा को दी गई किताब कुरआन के समान थी। क़यामत के दिन अल्लाह के अलावा जिनकी इबादत की जाती थी, वे सब मिट जाएंगे। क्या तुमने कभी सोचा है कि अगर कुरआन सच में अल्लाह की ओर से है और तुमने उसे झुठला दिया, तो तुम्हारा अंजाम क्या होगा?	1110

रुकू	सूरह और आयत	विषय	पृष्ठ
421	42 अश-शूरा 1-9	जो लोग अल्लाह की मखलूक को उसका दर्जा देते हैं, उनकी इस हरकत से आसमान ऊपर से फट पड़ता, अगर फ़रिश्ते ज़मीन के रहने वालों के लिए मग़फ़िरत की दुआ न कर रहे होते।	1113
422	42 अश-शूरा 10-19	इस्लाम वही दीन है जो नूह, इब्राहीम, मूसा और ईसा पर लागू किया गया था। उन्हें हुक्म दिया गया था कि दीन-ए-इस्लाम को कायम करें और उसमें फूट (फ़िरके) न डालें।	1114
423	42 अश-शूरा 20-29	जो आख़िरत की फ़सल चाहता है, उसे कई गुना दिया जाएगा, लेकिन जो सिर्फ दुनिया की फ़सल चाहता है, उसे यहीं से एक हिस्सा मिलेगा, मगर आख़िरत में उसका कोई हिस्सा नहीं होगा।	1118
424	42 अश-शूरा 30-43	जो भी मुसीबतें लोगों पर आती हैं, वे उनके अपने कर्मों का नतीजा होती हैं। सच्चे मोमिन वे हैं जो नमाज़ कायम करते हैं, ज़कात देते हैं और जब उन पर जुल्म किया जाता है तो अपना बचाव करते हैं।	1121
425	42 अश-शूरा 44-53	असली नुक़सान उठाने वाले वे हैं जो क़यामत के दिन घाटे में रहेंगे। अल्लाह जिसे चाहता है बेटियाँ देता है और जिसे चाहता है बेटे देता है। किसी इंसान के लिए यह मुमकिन नहीं कि अल्लाह उससे आमने-सामने बात करे।	1123
426	43 अज़-ज़ुख़ूरुफ़ 1-15	क़ुरआन एक नक़ल है उस असली किताब से जो अल्लाह के पास सुरक्षित है। यहां तक कि मुशरिक भी मानते हैं कि आसमान, ज़मीन और उसमें मौजूद हर चीज़ अल्लाह की बनाई हुई है। सवारी पर बैठने से पहले की दुआ।	1126
427	43 अज़-ज़ुख़ूरुफ़ 16-25	कुछ मुशरिक फ़रिश्तों को अल्लाह की बेटियाँ मानकर स्त्री देवी समझते हैं।	1129
428	43 अज़-ज़ुख़ूरुफ़ 26-35	पैग़म्बर इब्राहीम ने अल्लाह की वहदानियत को पहचाना और शिर्क को ठुकरा दिया। अगर यह डर न होता कि सारी मानवता काफ़िरों की एक ही जाति बन जाएगी, तो अल्लाह अविश्वासियों को चाँदी से बनी हुई हवेलियाँ दे देता।	1131

रुकू	सूरह और आयत	विषय	पृष्ठ
429	43 अज-ज़ुख़ूरुफ़ 36-45	जो अल्लाह की याद से मुंह मोड़ता है, अल्लाह उसके लिए एक शैतान को क़रीबी दोस्त बना देता है। अगर तुम सही रास्ते पर चलना चाहते हो, तो कुरआन को मज़बूती से थाम लो।	1133
430	43 अज-ज़ुख़ूरुफ़ 46-56	पैगंबर मूसा को फिरऔन और उसके सरदारों के साथ भेजा गया, लेकिन उन्होंने मूसा और उन निशानियों का मज़ाक उड़ाया। नतीजतन, अल्लाह ने उन्हें सभी को डूबो दिया।	1134
431	43 अज-ज़ुख़ूरुफ़ 57-67	पैगंबर ईसा सिर्फ़ एक इंसान थे, जिन्हें अल्लाह ने अपनी नेमत से नवाज़ा और बनी इस्राइल के लिए एक मिसाल बनाया।	1136
432	43 अज-ज़ुख़ूरुफ़ 68-89	क़यामत के दिन मोमिनों को न कोई डर होगा और न ही कोई पछतावा। उन्हें जन्नत अता की जाएगी और खुश किया जाएगा। ऐ नबी, ईसाइयों से कह दो: अगर अल्लाह का कोई बेटा होता, तो मैं सबसे पहले उसकी इबादत करता।	1138
433	44 अद-दूख़ान 1-29	अल्लाह ने इस कुरआन को मुबारक रात (लैलतुल-क़द्र) में नाज़िल किया, जिसमें उसके हुक्म से तमाम मामलों का हिकमत के साथ फ़ैसला किया जाता है। पैगंबर मूसा और फिरऔन की क़ौम की कहानी से सीखने योग्य सबक।	1141
434	44 अद-दूख़ान 30-42	अल्लाह ने बनी इस्राइल को नजात दी और उनकी कमज़ोरियों के बावजूद उन्हें दुनिया की क़ौमों पर चुना। फ़ैसला का दिन ही दोबारा ज़िंदा किए जाने का मुक़र्रर वक्त है।	1144
435	44 अद-दूख़ान 43-59	जहन्नम में गुनाहगारों के लिए खाना और पीना। जन्नत में नेक लोगों के लिए भोजन और मनोरंजन।	1145
436	45 अल-जासिया 1-11	अल्लाह की निशानियों को तलाशने वालों के लिए सोचने का सामान। अगर वे अल्लाह और उसकी वहीयों पर ईमान नहीं लाते, तो फिर वे किस बात पर ईमान लाएँगे?	1147

रुकू	सूरह और आयत	विषय	पृष्ठ
437	45 अल-जासिया 12-21	अल्लाह ने समंदरों और जो कुछ आसमान और ज़मीन के बीच है, उसे इंसानों के लिए अधीन कर दिया है। बनी इस्राइल ने तौरात के ज़रिए इल्म आने के बाद अपने धर्म में फिरके बना लिए। ज़ालिम एक-दूसरे के मददगार हैं, जबकि नेक लोगों का मददगार खुद अल्लाह है।	1149
438	45 अल-जासिया 22-26	जिसने अपनी ख्वाहिशों को अपना माबूद बना लिया, अल्लाह उसे गुमराह कर देता है और उसके कानों और दिल पर मुहर लगा देता है।	1151
439	45 अल-जासिया 27-37	क़यामत के दिन अल्लाह का अविश्वासियों से ख़िताब।	1153
440	46 अल-अहकाफ़ 1-10	अल्लाह ने आसमान, ज़मीन और जो कुछ उनके बीच है, उसे हक़ प्रकट करने के लिए पैदा किया। जिनको मुशरिक पुकारते हैं, वे खुद नहीं जानते कि उन्हें पुकारा जा रहा है। कुरआन अल्लाह का कलाम है, न कि पैग़ंबर का। पैग़ंबर तो बस एक साफ़ तौर पर चेतावनी देने वाले हैं।	1155
441	46 अल-अहकाफ़ 11-20	कुरआन, पैग़ंबर मूसा को दी गई तौरात की वही पुष्टि करता है। जो लोग अपने माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करते हैं, उन्हें इनाम मिलेगा, और जो अपने माता-पिता को डांटते-फटकारते हैं, उन्हें सज़ा दी जाएगी।	1158
442	46 अल-अहकाफ़ 21-26	आद की क़ौम ने अल्लाह के पैग़ाम को ठुकरा दिया, जिसके नतीजे में उन्हें विनाश का सामना करना पड़ा।	1161
443	46 अल-अहकाफ़ 27-35	कोई माबूद अल्लाह के अज़ाब से लोगों को नहीं बचा सकता। जिन्नों के एक गिरोह ने कुरआन सुनने के बाद इस्लाम क़बूल किया और अपनी क़ौम के लिए दाई (प्रचारक) बन गए। अल्लाह का पैग़ाम पहुंचाते रहो और अविश्वासियों की बातों को सब्र के साथ सहन करो।	1163

रुकू	सूरह और आयत	विषय	पृष्ठ
444	47 मुहम्मद 1-11	अल्लाह अविश्वासियों के कर्मों को बेकार कर देता है। जंग की सूरत में, कैदियों को लेने से पहले काफ़िरों को पूरी तरह परास्त करो। अगर तुम अल्लाह के दीन की मदद करोगे, तो अल्लाह तुम्हारी मदद और हिफ़ाज़त करेगा।	1166
445	47 मुहम्मद 12-19	मोमिन अपनी ख़्वाहिशों के पीछे नहीं चलते। जन्नत और जहन्नम की मिसाल। मुनाफ़िक् वे हैं जिनके दिलों पर अल्लाह ने मुहर लगा दी है।	1168
446	47 मुहम्मद 20-28	आज्ञापालन (इस्लाम) का वादा और अच्छी बातें जो अमल के बिना हों, अल्लाह की नज़र में मलऊन (अस्वीकृत) हैं।	1171
447	47 मुहम्मद 29-38	अल्लाह मोमिनों की परीक्षा लेता है ताकि बहादुर और दृढ़ लोगों को परखा जा सके। जंग की सूरत में, अल्लाह मोमिनों का साथ देता है। अगर तुम्हें अल्लाह के रास्ते में देने के लिए कहा जाए, तो कंजूसी न करो।	1173
448	48 अल-फ़तह 1-10	अल्लाह ने मुसलमानों को हुदैबिया की संधि के जरिए एक खुली जीत अता की। पैग़ंबर से बैअत करना, अल्लाह से बैअत करने के बराबर माना जाता है।	1175
449	48 अल-फ़तह 11-17	वे बद्रू अरब जो इस्लाम और कुफ़्र की जंग में पैग़ंबर के साथ नहीं गए, उनके पीछे रहने की निंदा की गई है। सिर्फ़ अंधे, लंगड़े और बीमार लोग जंग से मुक्त हैं।	1177
450	48 अल-फ़तह 18-26	अल्लाह उन लोगों से राजी हुआ जिन्होंने हुदैबिया की संधि से पहले पैग़ंबर से बैअत की। अगर मक्का में मोमिन न होते, तो अल्लाह मुसलमानों को कुरैश के खिलाफ़ जंग की इजाज़त दे देता।	1180
451	48 अल-फ़तह 27-29	पैग़ंबर को मक्का फ़तह करने का ख़्वाब दिखाया गया। मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और उनके अनुयायियों के गुण।	1183
452	49 अल-हुजरात 1-10	पैग़ंबर के सामने आवाज़ धीमी रखने का अल्लाह का हुक्म। अगर मोमिन आपस में लड़ पड़ें, तो उनके बीच सुलह कराओ।	1184

रुकू	सूरह और आयत	विषय	पृष्ठ
453	49 अल-हुजरात 11-18	इस्लामी नैतिक आचरण के आदाब। इंसान को एक मर्द और औरत से पैदा किया गया है, और सबसे अफ़ज़ल वह है जो सबसे ज़्यादा परहेज़गार है। सच्चे मोमिन और सिर्फ़ मुसलमान के बीच का अंतर।	1187
454	50 काफ़ 1-15	मौत के बाद की जिंदगी एक हकीक़त है और इसमें कोई अजीब बात नहीं है।	1190
455	50 काफ़ 16-29	अल्लाह ने हर इंसान के साथ दो फ़रिश्ते नियुक्त किए हैं, जो उसके कहे गए हर शब्द को लिखते हैं। हर जिद्दी काफ़िर को जहन्नम में डाल दिया जाएगा।	1192
456	50 काफ़ 30-45	जहन्नम से पूछा जाएगा, 'क्या तू भर गई?' जहन्नम जवाब देगी, 'क्या और भी हैं?' अविश्वासियों को नसीहत करो और सब्र के साथ बर्ताव करो। उन्हें कुरआन के जरिए नसीहत दो।	1194
457	51 अज़-ज़ारियात 1-23	निश्चय ही क़यामत का दिन आकर रहेगा, सिर्फ़ गुमराह लोग ही इस सच्चाई से मुंह मोड़ते हैं।	1196
458	51 अज़-ज़ारियात 24-46	पैग़ंबर इब्राहीम की कहानी, जब उन्हें बेटे की खुशख़बरी दी गई। वही फ़रिश्ते जिन्होंने इब्राहीम को खुशख़बरी दी, उन्होंने समलैंगिकों की क़ौम को नष्ट कर दिया। फ़िरऔन, आद, समूद और नूह की क़ौम की कहानियों में एक सबक़ है।	1198
459	51 अज़-ज़ारियात 47-60	अल्लाह, जिसने आसमानों को बनाया और ज़मीन को फैलाया, उसने पैग़ंबर मोहम्मद को पूरी मानवता के लिए चेतावनी देने वाला बनाया है।	1200
460	52 अत्तूर 1-28	सत्य के इनकार करने वालों को जहन्नम की आग में डाला जाएगा। नेक लोगों के लिए इनाम जन्मत होगी, जहाँ वे अल्लाह की नेमतों का शुक्र अदा करेंगे।	1202
461	52 अत्तूर 29-49	पैग़ंबर का मिशन और अविश्वासियों की दलीलों का जवाब।	1205

रुकू	सूरह और आयत	विषय	पृष्ठ
462	53 अन-नज्म 1-25	पहली वही का दृश्य, जिसे फ़रिश्ता जिब्रील पैग़ंबर मोहम्मद के पास लेकर आए। अल्लाह ने उन्हें आसमानों, जन्नत और दूसरी महान निशानियों का दीदार कराया। लात, उज्ज़ा और मनात (अरबों की देवियाँ) सिर्फ़ वो नाम हैं, जो मुशरिक अरबों ने खुद बना लिए थे।	1207
463	53 अन-नज्म 26-32	फ़रिश्तों का ईश्वरीय सत्ता में कोई हिस्सा नहीं, और वे बिना अनुमति के सिफ़ारिश नहीं कर सकते। अपनी परहेज़गारी का दावा मत करो, अल्लाह ही जानता है कि कौन मुत्तकी और परहेज़गार है।	1209
464	53 अन-नज्म 33-62	कोई आत्मा दूसरे का बोझ नहीं उठाएगी; इंसान के लिए वही होगा, जिसके लिए उसने कोशिश की होगी।	1211
465	54 अल-क़मर 1-22	क़यामत का दिन करीब आ रहा है, फिर भी अविश्वासी अल्लाह की निशानियों पर ध्यान नहीं दे रहे हैं। हमने क़ुरआन को नसीहत के लिए आसान बना दिया है, तो क्या कोई है जो इससे सीख ले?	1213
466	54 अल-क़मर 23-40	समूद और लूत की क़ौम की कहानी, जिन्होंने अपने पैग़ंबरों को झूठा कहा, ताकि यह दिखाया जा सके कि अल्लाह का अज़ाब कितना भयानक था और उसकी चेतावनी कितनी स्पष्ट थी?	1216
467	54 अल-क़मर 41-55	फ़िरओन की क़ौम को अल्लाह की चेतावनी को झुठलाने की वजह से पकड़ लिया गया। वही चेतावनी तुम्हारे पास भी आई है, क्या तुम नसीहत नहीं लोगे?	1218
468	55 अर-रहमान 1-25	अल्लाह ही है जिसने इंसान को पैदा किया, उसे क़ुरआन सिखाया और अपने जज़्बात और ख़यालात को बयान करने का तरीका सिखाया। अल्लाह पूरब और पश्चिम का रब है, और वही समंदरों, उनके ख़ज़ानों और जहाज़ों को कायदे में रखने वाले क़ानून बनाता है।	1220
469	55 अर-रहमान 26-45	जो कुछ भी मौजूद है, वह नष्ट हो जाएगा, सिवाय अल्लाह के, जो हर समय बड़े कामों में मशगूल है। कोई भी अल्लाह के अधिकार क्षेत्र से भाग नहीं सकता। गुनाहगारों को जहन्नम में सज़ा दी जाएगी।	1222

रुकू	सूरह और आयत	विषय	पृष्ठ
470	55 अर-रहमान 46-78	नेक लोगों को जन्नत में हरे-भरे बागात, चश्मे, फल, शमीली हूरें और बहुत कुछ इनाम के तौर पर दिया जाएगा।	1224
471	56 अल-वाकिया 1-38	क्यामत का दृश्य, जब इंसान तीन समूहों में बांट दिया जाएगा: A. सबसे आगे रहने वाले समूह के लिए इनाम। B. दाएं हाथ वालों के लिए इनाम। C. बाएं हाथ वालों के लिए सजा।	1226
472	56 अल-वाकिया 39-74	अविश्वासियों को सृष्टि की मिसालों से नसीहत।	1229
473	56 अल-वाकिया 75-96	कुरआन के बारे में अल्लाह की गवाही।	1231
474	57 अल-हदीद 1-10	आसमानों और ज़मीन की हर चीज़ अल्लाह की तस्बीह करती है, जिसने छह दिनों में आसमान और ज़मीन को पैदा किया और वह हर चीज़ का इल्म रखता है। जो लोग सदका करते हैं, उन्हें भरपूर इनाम दिया जाएगा।	1233
475	57 अल-हदीद 11-19	उस दिन सच्चे मोमिनों का नूर उनके आगे चमक रहा होगा, जबकि मुनाफ़िकों का अंजाम अविश्वासियों से अलग नहीं होगा। जो लोग सदका करते हैं, उन्हें कई गुना लौटाया जाएगा और इसके अलावा भी उन्हें बड़ा इनाम दिया जाएगा।	1236
476	57 अल-हदीद 20-25	दुनिया की ज़िंदगी बस खेल, मनोरंजन और धोखा है। जो चीज़ें तुमसे छूट जाएं, उन पर ग़म न करो, और जो मिल जाएं, उन पर घमंड न करो।	1239
477	57 अल-हदीद 26-29	पैग़ंबर नूह, इब्राहीम और ईसा (यीशु) को सही रास्ते की हिदायत के लिए भेजा गया। रही बात रहबानियत (संन्यास) की, तो लोगों ने इसे खुद ईजाद किया।	1241
478	58 अल-मुजादिला 1-6	जिहार (बीवी को माँ कहकर तलाक़ देने) की मूर्तिपूजक प्रथा हराम कर दी गई। 'जिहार' करने की सज़ा।	1243

रुकू	सूरह और आयत	विषय	पृष्ठ
479	58 अल-मुजादिला 7-13	अल्लाह हर जगह मौजूद है, अगर तीन लोग आपस में छुपकर बातें करें तो वह चौथा होता है। गुप्त सलाह मना है, सिवाय नेकी और परहेज़गारी की बातों के। छुपकर साज़िश करना शैतान का काम है। बैठकों के आदाब। रसूल से अकेले में मशविरा करने से पहले सदका देने का हुक्म।	1245
480	58 अल-मुजादिला 14-22	जो लोग अल्लाह के ग़ज़ब के पात्र लोगों से दोस्ती करते हैं, उन्हें सख्त सज़ा दी जाएगी। सच्चे मोमिन वे हैं जो अल्लाह और उसके रसूल के विरोधियों से दोस्ती नहीं करते।	1248
481	59 अल-हशर 1-10	यहूदी कबीला बनू अन्नज़ीर को इस्लामी हुक्मत के खिलाफ़ बगावत करने पर जला वतन (निर्वासन) करने का हुक्म दिया गया। बनू अन्नज़ीर की संपत्ति का वितरण। सच्चे मुहाजिरों की ख़ूबियां और मदीना के सच्चे अंसार की ख़ूबियां।	1250
482	59 अल-हशर 11-17	मुनाफ़िकों की अहले किताब के साथ साज़िश। शैतान और एक अविश्वासी की मिसाल।	1254
483	59 अल-हशर 18-24	हर आत्मा को देखना चाहिए कि वह आख़िरत के लिए क्या भेज रही है। कुरआन इतना प्रभावशाली है कि वह पहाड़ को भी हिला सकता है। अल्लाह की पंद्रह विशेष ख़ूबियां।	1256
484	60 अल-मुमतहना 1-6	अल्लाह और मुसलमानों के दुश्मनों से दोस्ती मत करो। इब्राहीम और उनके साथियों की मिसाल मोमिनों के लिए बेहतरीन नमूना है। इब्राहीम और उनके साथियों की दुआ।	1257
485	60 अल-मुमतहना 7-13	उन अविश्वासियों से दोस्ती की मनाही में अपवाद, जिन्होंने न तो मोमिनों से जंग की और न ही उन्हें उनके घरों से निकाला। जो औरतें ईमान लाएं, उनके ईमान की परीक्षा लो, और अगर वे सच्ची निकले तो उन्हें उनके काफ़िर शौहरों के पास वापस मत भेजो। औरतों की बैअत (आज्ञापालन की शपथ)। उन लोगों से दोस्ती मत करो, जिन पर अल्लाह नाराज़ है।	1260

रुकू	सूरह और आयत	विषय	पृष्ठ
486	61 अस-सफ़ 1-9	ऐ मोमिनो, वह बात मत कहो जिसे तुम खुद अमल में नहीं लाते। पैगंबर ईसा (यीशु) ने अपने बाद एक रसूल के आने की खुशखबरी दी, जिनका नाम अहमद (मोहम्मद) होगा।	1263
487	61 अस-सफ़ 10-14	जहन्नम से बचने का सौदा। जैसे ईसा (अलैहिस्सलाम) के हवारियों ने किया, वैसे ही मोमिनो को अल्लाह के दीन के मददगार बनने का हुक्म दिया गया है।	1265
488	62 अल-जुमा 1-8	अल्लाह ने मोहम्मद को रसूल बनाकर भेजा। अल्लाह ने यहूदियों के इस दावे का खंडन किया कि वे दूसरों को छोड़कर सिर्फ अल्लाह के पसंदीदा हैं।	1267
489	62 अल-जुमा 9-11	जुमा (शुक्रवार) की नमाज़ की अनिवार्यता से संबंधित हुक्म।	1269
490	63 अल-मुनाफ़ेकून 1-8	मुनाफ़िक् इस्लाम और मुसलमानों के ऐसे दुश्मन हैं कि रसूल की दुआ भी उनके लिए अल्लाह की माफ़ी नहीं दिला सकती।	1269
491	63 अल-मुनाफ़ेकून 9-11	तुम्हारा माल और औलाद तुम्हें अल्लाह की याद से गाफ़िल न कर दे, वरना तुम सच्चे नुकसान उठाने वालों में से हो जाओगे।	1272
492	64 अत्त-तगाबून 1-10	आसमानों और जमीन की बादशाहत अल्लाह ही की है, और वह जानता है जो तुम छुपाते हो और जो तुम जाहिर करते हो। बेशक, मौत के बाद ज़िंदगी, क़यामत का दिन और अच्छे-बुरे कर्मों का बदला यकीनी है।	1272
493	64 अत्त-तगाबून 11-18	कोई भी मुसीबत अल्लाह की इजाज़त के बिना नहीं आ सकती। तुम्हारी बीवियों और औलाद में कुछ ऐसे हैं जो तुम्हारे दुश्मन हैं, उनसे होशियार रहो।	1275
494	65 अत्त-तलाक् 1-7	तलाक् और इद्दत (इंतज़ार की अवधि) के अहकाम। इद्दत की अवधि तीन हेज़ (मासिक धर्म) या तीन महीने है, और अगर गर्भवती हो तो बच्चे के जन्म तक।	1277

रुकू	सूरह और आयत	विषय	पृष्ठ
495	65 अत्त-तलाक् 8-12	अल्लाह के हुक्म की नाफरमानी सख्त हिसाब या मिसाली सज़ा ला सकती है, इसलिए अल्लाह से डरो और उसके क़ानूनों का पालन करो।	1280
496	66 अत्त-तहरीम 1-7	जिसे अल्लाह ने हलाल किया है, उसे हराम मत ठहराओ। पैग़ंबर की बीवियों को उनके रवैये पर नसीहत दी गई।	1281
497	66 अत्त-तहरीम 8-12	ऐ मोमिनो! अगर माफ़ी चाहते हो तो अल्लाह की तरफ़ सच्ची तौबा करो। नूह और लूत की बीवियों की मिसाल, जो जहन्नम में जाएंगी, और फ़िरऔन की बीवी और मरियम की मिसाल, जो जन्नत में जाएंगी।	1284
498	67 अल-मुल्क 1-14	सारे ब्रह्मांड की बादशाहत अल्लाह की है। निचला आसमान चिरागों (सितारों) से सजाया गया है। जहन्नम के बाशिंदों और उसके निगहबानों के बीच होने वाली बातचीत।	1286
499	67 अल-मुल्क 15-30	अल्लाह के मुक़ाबले कोई तुम्हारी मदद नहीं कर सकता। अल्लाह के अलावा कोई तुम्हें रोज़ी नहीं दे सकता। अल्लाह की सज़ा से कोई तुम्हें बचा नहीं सकता।	1288
500	68 अल-क़लम 1-33	अल्लाह ने मोहम्मद को बेहतरीन अख़लाक़ वाला क़रार दिया है। किसी झूठी क़समें खाने वाले, चुगली करने वाले या बदकिरदार अविश्वासी के आगे मत झुको। उन घमंडी और कंजूस बाग़ के मालिकों का क्या अंजाम हुआ, जो सदक़ा देना नहीं चाहते थे?	1291
501	68 अल-क़लम 34-52	अल्लाह मुसलमानों के साथ वही सुलूक नहीं करेगा जो गुनहगारों के साथ करेगा। अविश्वासी इसे क्यों नहीं समझते? जो लोग अल्लाह की वहियों पर ईमान नहीं लाते, उन्हें धीरे-धीरे विनाश की ओर ले जाया जाता है।	1294
502	69 अल-हाक्का 1-37	क़यामत और हिसाब के दिन का वर्णन। नेक लोगों और उनके इनाम का ज़िक्र। गुनहगारों और उनकी सज़ा का बयान।	1296

रुकू	सूरह और आयत	विषय	पृष्ठ
503	69 अल-हाक्का 38-52	कुरआन अल्लाह का कलाम है, न कि पैगंबर का, और यह उन लोगों के लिए नसीहत है जो अल्लाह से डरते हैं।	1300
504	70 अल-मआरिज 1-35	क़यामत का दिन पचास हजार साल के बराबर होगा। अविश्वासी चाहेंगे कि वे अपनी औलाद, बीवियों, भाइयों और रिश्तेदारों की कीमत पर खुद को सज़ा से बचा लें, लेकिन ऐसा नहीं होगा।	1301
505	70 अल-मआरिज 36-44	स्वर्ग अविश्वासियों के लिए नहीं है। अविश्वासियों की आँखें झुकी होंगी और उनके चेहरे शर्म से विकृत होंगे।	1303
506	71 नूह 1-20	नबी नूह (अलैहिस्सलाम) का उपदेश और अल्लाह के प्रति उनकी संपूर्ण समर्पण, जब उन्होंने अपने सभी प्रयासों को पूरी तरह समाप्त कर लिया।	1305
507	71 नूह 21-28	नबी नूह (अलैहिस्सलाम) की प्रार्थना कि धरती की सतह पर कोई भी अविश्वासी न छोड़ा जाए।	1307
508	72 जिन्न 1-19	कुरआन सुनने के बाद इस्लाम स्वीकार करने वाले जिन्नों का एक सुंदर भाषण। जिन्नों के भी विभिन्न धर्म और संप्रदाय होते हैं—कुछ मुस्लिम होते हैं और कुछ सत्य से भटके हुए। मस्जिदें केवल अल्लाह की इबादत के लिए बनाई जाती हैं, इसलिए उसके अलावा किसी और को न पुकारो।	1308
509	72 जिन्न 20-28	रसूलों के पास किसी को नुकसान पहुँचाने या लाभ देने की शक्ति नहीं होती, उनका कार्य केवल अल्लाह का संदेश पहुँचाना होता है। केवल अल्लाह ही ग़ैब (अदृश्य) का ज्ञान रखता है, और वह इसे उन्हीं रसूलों पर प्रकट करता है जिन्हें वह चुनता है।	1311
510	73 अल-मुज़म्मिल 1-19	अल्लाह ने नबी को पूरी रात नमाज़ में खड़े रहने का आदेश नहीं दिया। जो लोग नबी का विरोध करते हैं, उन्हें भारी बेड़ियों में जकड़ा जाएगा और जलती हुई आग में डाला जाएगा। कुरआन उन लोगों के लिए एक अनुस्मारक है जो सही मार्ग की तलाश में हैं।	1313

रुकू	सूरह और आयत	विषय	पृष्ठ
511	73 अल-मुजम्मिल 20-20	कुरआन से उतना पढ़ो जितना तुम आसानी से पढ़ सकते हो। जो कुछ भी तुम अल्लाह के रास्ते में खर्च करोगे, उसे आखिरत में अवश्य पाओगे।	1315
512	74 अल-मुदस्सिर 1-31	नबी के लिए स्वच्छता और धैर्य बनाए रखने के निर्देश। क़ियामत का दिन बहुत कठिन होगा, विशेष रूप से उन लोगों के लिए जो अल्लाह की आयतों का इनकार करते हैं और उसके मार्ग का विरोध करते हैं।	1316
513	74 अल-मुदस्सिर 32-56	वे कर्म जो जहन्नम की आग की ओर ले जाते हैं: नमाज अदा न करना, ग़रीबों को भोजन न कराना, व्यर्थ बातों में समय गँवाना और क़ियामत के दिन का इंकार करना।	1319
514	75 अल-क़ियामत 1-30	पुनरुत्थान और फैसले के दिन से सावधान रहो, जिससे कोई बच नहीं सकता। इससे बचने का कोई मार्ग नहीं है। अल्लाह ने स्वयं कुरआन की हिफाजत की जिम्मेदारी ली है। अविश्वासियों की मृत्यु के अंतिम क्षण।	1321
515	75 अल-क़ियामत 31-40	अविश्वासी ईमान नहीं लाते क्योंकि उन्होंने कभी इस्लाम को गंभीरता से नहीं लिया।	1323
516	76 अद-दहर 1-22	ब्रह्मांड मानव के अस्तित्व में आने से पहले ही मौजूद था, फिर अल्लाह ने मनुष्य को बनाया, उसे मार्गदर्शन दिया और उसे स्वतंत्र इच्छा प्रदान की—चाहे वह ईमान लाए या इंकार करे। जो लोग ईमान लाने का चयन करते हैं, उनके लिए जन्नत में आदर्श जीवन होगा।	1324
517	76 अद-दहर 23-31	अल्लाह ने इस कुरआन को धीरे-धीरे उतारा, ताकि यह इंसानियत को दरपेश मसलों का समाधान दे सके। यह उन लोगों के लिए नसीहत है जो अपने रब का मार्ग अपनाना चाहते हैं।	1326
518	77 अल-मुरसलात 1-40	अल्लाह जीवन देने वाली हवाओं, बारिश और फ़रिश्तों की क़सम खाकर कहते हैं कि क़ियामत का दिन अवश्य कायम होगा। उस दिन अविश्वासियों के लिए तबाही होगी! उस दिन अविश्वासियों से कहा जाएगा कि वे उस जहन्नम की ओर बढ़ें, जिसका वे इनकार किया करते थे।	1328

रुकू	सूरह और आयत	विषय	पृष्ठ
519	77 अल-मुरसलात 41-50	नेक लोग वह सब कुछ पाएंगे जो वे चाहेंगे। अविश्वासियों के लिए चेतावनी।	1330
520	78 अन-नबा 1-30	आसमान, जमीन, पहाड़ और वनस्पतियों की रचना स्पष्ट रूप से कियामत के दिन की ओर इशारा करती है। पुनरुत्थान और मनुष्य का अल्लाह की अदालत में हिसाब-किताब।	1331
521	78 अन-नबा 31-40	नेक लोग प्रसन्न होंगे, जबकि अविश्वासी इच्छा करेंगे कि काश वे सिर्फ मिट्टी बनकर रह जाते।	1333
522	79 अन-नाज़ियात 1-26	मृत्यु, पुनरुत्थान का दिन और मृत्यु के बाद का जीवन। मूसा (अलैहिस्सलाम) की कथा, जब उन्होंने फ़िराओन को अपने रब की ओर बुलाया, लेकिन उसने अल्लाह का इनकार किया और सज़ा के लिए पकड़ लिया गया।	1334
523	79 अन-नाज़ियात 27-42	मनुष्य की रचना आसमान, जमीन और उसके भीतर की चीज़ों की रचना से कठिन नहीं है। कियामत के दिन सज़ा और इनाम।	1336
524	80 अबसा 1-42	जो लोग मार्गदर्शन चाहते हैं, उन्हें अल्लाह का संदेश पहुँचाने में प्राथमिकता दी जानी चाहिए। अपने सृजनहार को पहचानो और अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करो। कियामत के दिन कोई भी अपनी माँ, पिता, भाई या बच्चों की परवाह नहीं करेगा।	1337
525	81 तक्वीर 1-29	कियामत के दिन का भयावह दृश्य। फ़रिश्ता जिब्रैल के माध्यम से नबी को कुरआन पहुँचाया गया। यह संदेश पूरी दुनिया के लोगों के लिए है।	1340
526	82 अल-इनफ़ितार 1-19	कियामत के दिन क्या होगा, इसका वर्णन। निगरान फ़रिश्ते सभी कर्मों को लिख रहे हैं। अल्लाह स्वयं न्याय करने वाला होगा।	1342
527	83 अल-तत्फ़ीफ़ 1-36	धोखा देने वालों से हिसाब लिया जाएगा और उन्हें सज़ा दी जाएगी, जबकि नेक लोगों को नरम गद्दों, बेहतरीन पेय और विशेष झरने के पानी से नवाज़ा जाएगा। आज अविश्वासी ईमान वालों पर हँसते हैं, लेकिन एक दिन आएगा जब उन पर हँसा जाएगा।	1343

रुकू	सूरह और आयत	विषय	पृष्ठ
528	84 अल-इनिशक़ 1-25	क़ियामत के दिन आसमान फट जाएगा और ज़मीन फैला दी जाएगी। आमालनामे बाँटे जाएंगे; नेक लोग प्रसन्न होंगे, जबकि अविश्वासी मौत की पुकार करेंगे। लोगों से कहा गया है कि जब तक समय है, ईमान ले आओ।	1346
529	85 अल-बुर्ज 1-22	जो लोग ईमान वालों को यातना देते हैं, उन्हें क़ियामत के दिन भयंकर अग्नि की सज़ा दी जाएगी। जिसने तुम्हें पहली बार पैदा किया, वही तुम्हें दोबारा जीवित करेगा ताकि तुम्हारा हिसाब लिया जा सके।	1348
530	86 अत-तारिक़ 1-17	प्रत्येक आत्मा पर एक नियुक्त निगरान फरिश्ता होता है। कुरआन अल्लाह का अंतिम और निर्णायक वचन है।	1350
531	87 अल-अला 1-19	अल्लाह की तसबीह करो; अल्लाह ने नबी की कुरआन को याद रखने की ज़िम्मेदारी ली है। यह एक नसीहत है, और जो इसकी नसीहत को मानेंगे, वे आखिरत में सफल होंगे।	1351
532	88 अल-गाशिया 1-26	क़ियामत के दिन अविश्वासियों और ईमान वालों की स्थिति। प्रकृति के अजूबे, नसीहत और हिसाब-किताब।	1352
533	89 अल-फ़ज्र 1-30	पिछली क़ौमों के उदाहरणों के माध्यम से सामाजिक कल्याण के लिए नसीहत। वास्तविक सामाजिक भलाई के लिए किन चीज़ों से बचना चाहिए? क़ियामत का दिन नसीहत मानने के लिए बहुत देर हो जाएगी। अल्लाह का ईमान वालों से संबोधन।	1354
534	90 अल-बलद 1-20	मक्के के अविश्वासियों के लिए नसीहत। अल्लाह ने तुम्हें एक जुबान और दो होंठ दिए हैं ताकि तुम उसे नियंत्रित कर सको। एक नेक व्यक्ति के गुण।	1356
535	91 अश-शम्स 1-15	सफलता आत्मा को शुद्ध रखने पर निर्भर करती है, और असफलता उसे बिगाड़ने पर। थमूद की भ्रष्ट क़ौम को ज़मीन के बराबर कर दिया गया।	1357
536	92 अल-लैल 1-21	नेक लोगों के लिए अल्लाह आसान रास्ता बनाएगा और दुष्टों के लिए कठिन रास्ता। यदि कोई खुद विनाश के रास्ते पर है, तो उसे धन से क्या लाभ मिलेगा?	1359

रुकू	सूरह और आयत	विषय	पृष्ठ
537	93 अद-दोहा 1-11	मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को शुभ समाचार दिया गया कि उनका आने वाला समय पहले से बेहतर होगा।	1360
538	94 अल-इनशाराह 1-8	अल्लाह ने नबी का सीना खोल दिया, उनका बोझ हल्का कर दिया और उनके नाम को बुलंद किया।	1361
539	95 अत्त-तीन 1-8	मनुष्य सभी सृष्टियों में सर्वोत्तम है, सिवाय अविश्वासियों के।	1361
540	96 अल-इक्रा 1-19	अल्लाह के नाम से पढ़ो, जिसने मनुष्य को बनाया और उसे क़लम के द्वारा ज्ञान सिखाया। जो लोग अल्लाह की इबादत से रोकते हैं, उन्हें उनकी पेशानी पकड़कर जहन्नम में घसीटा जाएगा।	1362
541	97 अल-क़द्र 1-5	शब-ए-क़द्र एक हजार महीनों से बेहतर है।	1363
542	98 अल-बईय्याना 1-8	अहल-ए-किताब ने मार्गदर्शन मिलने के बाद ही फ़िरकों में बँटने की राह अपनाई। उन्हें भी नमाज़ कायम करने और ज़कात अदा करने का आदेश दिया गया था।	1364
543	99 अल-ज़लज़ला 1-8	ज़मीन उन सभी घटनाओं की गवाही देगी जो उस पर घटीं, और लोगों को उनके आमालनामे दिखाए जाएंगे।	1365
544	100 अल-आदियात 1-11	घोड़ों का उदाहरण, जो अपने मालिकों के प्रति अधिक वफ़ादार और आभार प्रकट करने वाले होते हैं, जबकि मनुष्य अपने रब के प्रति उतना शुक्रगुज़ार नहीं होता।	1366
545	101 अल-क़ारिआ 1-11	क़ियामत के दिन का एक दृश्य।	1367
546	102 अत्त-तकासुर 1-8	मनुष्य के विनाश का कारण दुनिया के लाभ के लिए आपसी होड़ है। वास्तविक सफलता आख़िरत के लिए कर्म करने में है।	1368
547	103 अल-अस्र 1-3	निजात (मुक्ति) का मार्ग पाने का सूत्र।	1368

रुकू	सूरह और आयत	विषय	पृष्ठ
548	104 अल-हम्ज़ा 1-9	चुगली करने वाला, बदनाम करने वाला और कंजूस जहन्नम की आग में डाला जाएगा।	1369
549	105 अल-फील 1-5	अल्लाह के पास इतनी शक्ति है कि वह हाथियों की सेना को पक्षियों के झुंड के द्वारा पराजित कर सकता है।	1369
550	106 कूरैश 1-4	अल्लाह पर ईमान लाओ, वही तुम्हारा रोज़ी देने वाला है।	1370
551	107 अल-माऊन 1-7	आखिरत का इनकार नैतिक पतन और दूसरों की परवाह न करने का मुख्य कारण है।	1370
552	108 अल-कौसर 1-3	अल्लाह ने मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के नाम को अमर बना दिया है।	1371
553	109 अल-काफ़े रून 1-6	धर्म के मामलों में समझौता न करने का आदेश।	1371
554	110 अन-नस्र 1-5	विजय अल्लाह की मदद से ही मिलती है।	1372
555	111 अल-लहब 1-5	अल्लाह की लानत अबू लहब और उसकी पत्नी पर।	1372
556	112 अल-इख़लास 1-4	तौहीद - अल्लाह की अद्वितीय विशेषता।	1373
557	113 अल-फ़लक् 1-5	सभी बुराइयों से अल्लाह की शरण लो।	1373
558	114 अन-नास 1-6	चुपके से फुसफुसाने वालों से अल्लाह की शरण लो।	1373